मःशीजानम लक्ती।

ফলতঃ

🎒 ভবানী বিষয়ক গীতাবলী

न्द वश्व

শ্রীকৃষ্ণস্য রাসলীলা বর্ণনা পদাবলী
আন্দুল নিবাসি
শ্রীমন্মাধবচন্দ্র দক্ত চোক্তর্দ্ধুরিনোভিমতেন
শ্রীযুত রামচন্দ্র ভট্টাচার্য্য
কর্ত্ত্বক সংগ্রহীতা



সমাচার চব্রিকা যন্ত্রালয়ে যন্ত্রিতাভুত্

শক নরপতে রতিতার্ক। ১৭৭

नरमा

लिशिः ल बा मता य

ভূমিকা

শাস্ত্রবিদ্যা, শস্ত্রবিদ্যা, শিশ্পবিদ্যা, সংগীতবিদ্যা, ইত্যাদি বিদ্যা সমূহের মধ্যে সংগীত বিদ্যা বিশেষ আদরণীয়া মন্য মানা হইতে পারে, তদ্ধেতু এই বিদ্যালোচনার দারা যেমন তদ্বিদ্ধ ব্যক্তির চিল্লোস হয় তেমনি শ্রোতা যে অন্য জন দে জনের মনেরো মহোলান জন্মে, স্থপক্ষ ও পর পক্ষ উভয় পক্ষে মঙ্গল স্থচনা করিতে অন্য বিদ্যার প্রায় ঈদৃশী শক্তি বিরহ, বিশেষতঃ সংগীতের এই একখানি আশ্চর্য্য মাধুর্য্য যে নিজের আমোদ ও পরের বিনোদ ছলে জগদস্বার গুণানুবাদন, ও হয়িনাম সংকীর্ত্তন, যে মহাপুণ্য তাহা অনায়াশে লাভ হয়, এই পরম পদার্থের কিয়দংশে प्यश्मी इएनाजिनारम विविध विमा विभावम और्यामहत्त ভট্টাচার্যা মহোদয়কে অনুমতি দিয়া নিবেদন করিলাম যে জগদীশ্বরের ও জগদীশ্বরীর গুণান্তুকথন স্বৰূপ গীত চয় প্রস্তুত করেন, যে তদাবলী কুমুদিনী হৃৎ সরসাতে উৎফুল্লা ·হওত দিগ্দেশ আমোদিনী, বিশেষ স্তম্মকরন্দপানে প্র**মার্থ** বুবুকু মানস ভূজের হৃট বর্দ্ধিনী হইতে পারে, পশ্চাৎ সেই পুস্তকী শরচ্চক্রিকা সমাজান্তরীক্ষে উদিতা করাইয়া লিন্স মানস চকোরানন্দ সানন্দ করাইব, তদমুক্রমে প্রীযুত ভট্টা চার্য্য মহাশয় অমুকন্সা, পুরঃসর গীত কবিতা রচিতা ও প্রক টিতা করণেতে সেই শর্ম্ম সম্বন্ধিনী গানৰপিনী কাদম্বিনী দৃষ্টে হুন্টে চিত্র শিখী সুধী হইয়ানিত্য নৃত্য করিতে থাকিল।

> কবিতা রসমাধুর্য্য কবির্নেতিন ওৎকবিঃ। ভবানীক্রকুঠি জ্ঞিক ভবোবেভিন সাপূনঃ॥

भारत वामा ७ तमन। यद्य थिखि करन क तो भ तां भिनी जान मान महार्याक भिनन ७ के का करिनाम, किम्प अश्वाम ७ किए। में महान भी किए मी प्रमादक वावहार्य जिल्ल कारा हम करें ए के महान भी किए मी प्रमादक वावहार्य जिल्ल कारा हम करें ए काथा। अमान भूकि पूजा येखान हम किया कारा किया मान मान मान मान मान मान महाकन भारत करा भी होने महाकन भारत करा कारा की ने निर्मा मान मान मान कारा किया की ने विहीन मीन की ने आखि भारत कारा मान महाज कर हुए ने ति की ने आखि मान महाज है कारा स्थान की ने की ने

অপ্ৰিথ নেৰে মুখ্যুক্তা ওৰং গৃহতি চাৰেরঃ। দোষপ্ৰাহী ওৰতাৰি, অন্তৰ্গু ভত্যুৰ্থা ।

কিন্পুনর্ভ্রতমোধ্যিত ১২৫৪ বলাকার স্থে**জ্রৈয়ক** বিংশতি দিনজেয়ং লি।বং।

শ্রীমাধবচল চৌধুরী। । অন্নেপুল ধাস।

মোং নওয়াবগঞ্। } জিলা রাজশাহী। \$ ্দ্রী শ্রীগুরু: ।। ব্রিজয়তাং ॥

---CP

म॰ शोडामृड वहती।

ल्यामध्य धर मुखार न ।



ब्राज्य भी विषयक भी जानमी।

दाम किही या तामटक में तालिशाए। धहताचा नग भीता ।

हानम नल कमल कारत, नाथ प्यति वितारक ॥ ध्रः॥ मम भा छ नते, कमल विभन, श्विष्ठकृत तारक ॥ क्षः॥ अक्ष्रम क्रिंक विकार ज्वन, व्यात स्थार हल क वत्न, हल्म श्रीकि विकार व्यक्त व्यक्त वार्क ॥ > ॥ धिन्ध मूथ ख्रा ख्रा हमन, कक्ष्म नत्नम व्यवकारमा त्रा व्याव कत श्विष्ठ वत्न श्वा छत्न मारक ॥ २ ॥ व्या भामत वारम नन्न । विद्यापि वत्न नगमा, माना मानम व्यवप व्या (क्षि मनन भा का । ७ ॥ छान छान छत्न छत्न क्षा ॥ ० ॥ छान छत्न छत्न छत्न क्षा । ० ॥ छान छत्न छत्न छत्न व्यवमा, माना त्रा विनाम, छात्र हिं धिनाम हत्न क्षा छत्न व्यवप व्यव विराह्म ॥ ८ ॥

জীনাথ চরণ, নিত্যসদন, চিন্তা ব্রহ্ম কালে ॥ ধ্রং ॥ অরুণ চরণ, শ্বেত বরণ, শোভিত শশী ভালে ॥ ৠ ॥ অপরপ রপ বামে শোভিত, ভাবরে সাধক জন অন্তুত, উভয়ের চিত্ত সাম রসিত, দশ শত দল কমলে ॥ ১॥ যে জনে চিন্তে সতত মননে, নান্তি উপমা তাঃ "ব্রিভুবনে, রামচন্দ্র বলে সেই সেকলে, নাহি শিব মনু বিফলে ॥ ২॥

काली काली दल, वृथा पिन शिल, मानव पिर रहराना थात । क्षर । अनम महान, पिर थातन, अभी उलक काल कात है। कि । करहें शिर्म बनात कर्नवात, काल ते महिल महान महिल काल मात विभाव कि कि मृत मकिल, काल नाम मव उपात ॥ > ॥ मार्थक पिर मानित जात, या जन काली है नाम जातन मात, यारे स्वाप मान महिल जात । २ ॥ मार्थन मान स्वाप अजन होन, हामहान पिन पितत अवीन, रहा मजम काल कात अविन रहा महिल कात ॥ २ ॥ मार्थन महिल अजन होन, हामहान पिन पितत अवीन, रहा मजम काली त अम्म, जनकात अजि हर्विक जात ॥ ० ॥

আজু শুভ দিন, হইবেরে মানা, কালী করে সারণ।। প্রংগ সুহভাতা যদি হইলো রজনী, সফল করোলে জাবন।। কালীতে অভিন্ন কালী, না , নিতাভ পাই ব মাক্ষাম, পূরিবে সকলি সনেরি কাম, ত্রিতাপ হইবে

स्मित ।। > ।। शक्ना श्मिन वही, यहूना कारवही, महत्वि व्यक्ति विक विक कार्या । २ ।। व्यथिशा स्थूता कार्याक्षा कि स्थान नाम मिति है ।। व्यथिशा स्थूता कार्याक्षा कि स्थान नाम मिति है ।। २ ।। व्यथिशा स्थूता कार्याक्षा कि स्थान नाम मिति के सेव मान स्थान के कीरन महन ।। २ ।। तामह हा के की मान है मिति है ।। २ ।। तामह हा के की मान है मिति है ।। २ ।। तामह हा के की मान है मिति व्यक्ति के की मिति विक स्थान ।। ३ ।। वामह व्यक्ति के की मिति विक स्थान ।। ३ ।। वामह व्यक्ति के की मिति विक स्थान ।। ३ ।।

अन्ता छव छद, मि मि पि नि प्राप्त, जिल्ला नि नि । अः॥
मूलमः प्राप्तमा, विरमर कलना, जरान जञ्ज नामिनी ॥
स्वि व तानी शक्त बाहिनी, प्रमामनी मकत वाहिनी, विक्रुका जिल्ला विक्रित वर्तमः, मिना ज्ञा किनि । >। मननाचक नि नि नि नि नि , प्रमान मिना ज्ञा किनि । >। मननाचक नि नि नि नि , प्राप्त माना किनी । अ। मननाचक क्रमञ्जू नि । अमान मानिनी। >। विक्रित जनता मल्या मुला।, ज्ञान म मानिनी। >। विक्रित जनता मल्या मुला।, मूत ज्ञान म मानिनी। >। विक्रित जनता मल्या मुला। प्राप्त ज्ञान मिन्नी मुत निम्ना, मुत्रुनी प्रतक्त विवासिनी, ज्ञान विद्या विवासिनी।। अ॥ जङ्ग जनता ज्ञान जनती, यमूना वानी मह नामिनी, मानत मिन्नी मनत विद्या ज्ञान विवासिनी।। अ॥ कङ्ग जनता ज्ञान कनिनी नि किनि।। अ। जिञाल प्राप्तनी जिल्ल मानिनी नि हीन कानिनी।। अ। जिञाल प्राप्तनी जिल्ल मानिनी नि हीन कानिनी।। अ। जिञाल प्राप्तनी जिल्ल मानिनी नि हीन कानिनी।। अ।

ৈজ্বৰ বাগেণ।। একতালা তালেন গীয়তে।।

सन कि कि कमन विषय निष्ठि। सि दात वार्णा। अः। कूटल मित काली, जात नाम काली, धर्म कर्म मर्म नार्णा। कः।। नार्ण मूथ स्माप्त, मुश्य विश्वक, कतात्र श्रामान वार्णाः। कात दर्भा छत्त, पूष्ठात मव कर्त, यत वाहित कत्रन।।। >।। श्रतात्र कोशीन, करत भीन होन, माथा गृष्ठ करे। यव्यन्तामाः। छाहे माथा शात, हेक्। पा छ। धात, नाट्य शात, स्माप्त काला हानाः।। २।। नाहि व्याशन श्रव, करत मकल घत, छरन लाट्य छत, किहर व म्माः। चिश्वकावहता, क्वल ध्यम कत्र, विष्यू करत ना स्तर हैन्द्र कामः। ।। काली श्रव्छ वान्न, तामय स्वान्त वान्त, श्रामा श्रामा श्रामा श्रामा वान्ती हैन्ल की हिंवानाः।। ४।।

মন জাননা তারে, কালী কেনন মেরের মেরে সে
টী। প্র'। পুরুষ প্রকৃতি, অবিশেষ মূরতি, কেউ নারে তারে
করিতে থাটী।। ৠ ।। করি তল্প, বড় দরশন, ভেবা ঘরে
গেল খোল্লমাটী। ৠ । দৈতা ঘৈতবলে, প্রতি ক্ষান্ত কলে, কি
তার অন্যে জানে পরিপাটী। ১।। মাথার খাটের খুরা, করে
তিন রুড়া, শুরে আদি রুড়া করে ভুকুটী।। ৠ ।। নাভি মূলে
বিসি. হরে মুক্ত কেশী, স্কে দোলার রাজা চরণ ছুটী।। ২ ।

কার সাধ্য বটে, দকিশার নাটে, ভার লয়ে করে আটা আঁটি।। #।। দিবা বীরাচার, বেড়ায় ছারে ছার. পশু মৈল ফত দাঁত কপাটা।। ৩। রামচন্দ্র কয়, নাহি কিছু ভয়, মনের কদাশয়, গিয়াছে ছুটি। ৠ।। বেটি আগন কায়, শ্রীনাথের পায়, গেছে ভার ভব বরুন কালি॥ ২।।

আলাহাইয়া বেলাওল। তাল আড়া।।

करत यन नील नीत्रक, मन शिक्षण, स्किण हिश्वा माला, वाला नव उक्तिनी ।। क्ष्रः ।। तक्षण निर्धाता, मदाकादता, क्ष्रा किश्वाता, श्रूष मुन्दत मह, ति शिक्ष विष्विनी ।। *।। উদিত হ্দরাকাশে, জ্ঞান নেত্রে সুপ্রকাশে, অন্য থাকি সে বিকাশে, সন্তুর না হয়। *।। যে ক্ষেপে যে চিন্তাকরে, সেই ক্ষ্র দেখে তারে, ঘটেই সেই বটে, ভক্ত মনো तक्षिनी ।। >।। ধর্মাবর্ম পরিহরে, ত্রহ্মপদ তুছ করে, ভাবি ক্স নির্ম্বরে, চিদানন্ত ময়।। *।। যে জন এইক্স ভাবে, ভাবে সঙ্গ নাহি পারে, রামচন্দ্র পশুভাবে, মূচ অজ্ঞানী ।। ২।।

মাগোকত নিনে নিতার হবে, বক্রী কি আছে গো ছুঃখ না জানি শিবে ।। ধ্রুং ।। বহুকর্ম স্থৃত্র ছারে, বদ্ধ মায়। কারাগারে, অনস্ত কামনা বেড়ি, কিসে কাটিবে ॥ #॥ মনোরাজা অবিচারে, দেহ দণ্ড সদাকরে, দ্বার রক্ষা করে রিপুগণ প্রতি দ্বারে ।। #।। দোহাই দিতে গো চাই, স্বাবকাশ নাহিপাই, রসনা ঘোষণা ভয়ে, কুণ্ঠিত ভাবে ।। ১ ।। ত্রিতাপে সদা তাপিত, যন্ত্রণায় জনম গত, হয়েছি জীবন মৃত, পাপের আবার ।। *।। কেহ না সম্ভাবে দাসে, অকৃতি বলিয়া হাসে রামচক্র এই ভাবে, গাঁত নাই ভবে ।। ২ ।।

অরে মন বিক তে, সানে নজ ইলা, সফল মানব দেহ বিফল করিলা।। ধ্রুং ।। মরিতে না হবে যেন, নিতান্ত ভেবেছ মন, বিষম কালের ভার, কিলে এড়াইলা।। ক্রঃ। ইইরা কুদ স্পি সঙ্গ, পরমার্থ দিরা ভঙ্গ, দেখিয়া বিষয় রঙ্গ, রঙ্গী ইইলা।। ১॥ তুনিতো সকলি জান, অনর্থে সার্থতা মান, এইতো আশ্চর্যা জ্ঞান, ভুলিলা ভুলাইলা।। ২।। অবিশ্রান্ত বহু ভার, গ্রান্তি দূর নাহি কর, একি ভ্রান্ত দেখিতার, গর্দ্ধভের প্রায়া। ৩।। বিষয়ে মার্জ্জার শ্রম, ত্যজি যাহ লক্ষাক্রম, রান্চন্দ্রে হেন ভ্রম, তুনি ঘটাইলা।। ৪।।

রাগিনী বেলাওল।। তাল আড়া।।

মাই তেরি নীর, নির্মাল দরশন মে, হরত জনমহ কেরি পাপ।। ধ্রুং।। কীট পতক্ষ অধম, নর খর পশু পরশ মে ভাকো, তরসে ত্রিতাপ ।। ৠ ।। নিরপ্তন নিরাকার, পরং ব্রহ্ম মন বার, আগম নিগম সার, মহিমা ভূরি ।। ৠ ।। শিরেধরে ত্রিপুরারি, কো জানে ক্যা গুল তেরি, মিলে চতুর বরগ, যোকরে অলো।। ১ ।। তাবতহি গতাগত, ক্রতহি অবিরত, নাহি মরে যাবত, গাজনীরে ।। ৠ ।। কহত একবি রাম, জগত অধনাধ্য, মিলত প্রম ধদ, সব শৌত মাপ।। ২ ॥

রাগিনী বেলাওল আলাহাইয়া ॥ **হ**য়ি তাল ॥

[b]

রাগিণী ঝিঝিটি ললীত।। তাল বিমাতেতালা।।

कारिशाना कुछनिनी काली, ज्ञालस यूमाहेश। तिहिला किशा। छः। स्वराष्ट्र महनाजादत, विष छछ महहाहत, विहिज्ञा कुछनी हरस, जिछित वा स्विता धूलिला। ॥ > ॥ ज्ञालसास एक धातन, कित कीव ज्ञाहतन, रिह्मू थ कित जादत, कुरु कि जुनाहेसः हिला का। २ ॥ तामहरू कित हिला काली हिसा ज्ञाहित। वामा कालि उद्या काली हिसा हिला। ३ ॥

বেমন অননী ভূমি, জানাইলা জানিলাম আমি গো
।। ধ্রু ।। শিব বাক্য সতা জ্ঞানে, বিশ্বাস আছে এচিরণে, অবি
শ্বাসের হেতু মারা, ঘটাও ভূমি আমার আমি।। ১ ।। ক্ষণেই নি
দেখাও রঙ্গ, উইপতি প্রলয় ভঙ্গ, না দেখি তার অজি মঞ্জ,
এই রঙ্গে ভূমাও অনি । ২ ।। তিগুণে প্রক হরে সদাই থাক
হাকাইলা, ভূমি কি সামান্যা মেরে, কাম শূন্যা হয়ে কামি
।। ৩ ।। রামচন্দ্রের দিন গত, আসার আসো বাড়াও কত,
ভূমিতেছি অবিরত, কেবল মারার হলে প্রেমী। ৪ ।।

হলোনা হবেনা আমার, অপরাধ মার্জ্ডনা গো । ধ্রু। অশেষ প্রকারে তাহা, বিশেষঃ গেল গো জানা । 🚜 ॥ হার ছি পাপির রাজা, মন্ত্রী মন কামাদি প্রজা, লাভ করি রাজ কর, কেবল মাত্র যন্ত্রণ ॥ > ॥ মায়া দেশ কর্মা ক্ষেত্র, আপদ নামেতে মিত্র, অধর্ম নামেতে পূল্র, পাটরাণী ছুর্বা। সনা ॥ ২ ॥ ভুমদ ও করি করে, কালছত্র শিরোপরে, উদ্বেশ আসনে বিদ, ধারে অমঙ্গল সেনা।। ৩ ॥ রামচন্দ্র নামে গড়ে, কর্মা স্থত্র নিশান উদ্ভে, জ্ঞান শূন্য ডঙ্কা পড়ে, ছুর্মশ ভেরী ঘোষণা॥ ৪ ॥

রাগিণী ভৈরবী ॥ তাল জলদ তেতালা ॥

কালী কাল ভয় হরা, আমা কেমন মেয়ে জীব শিব করা ॥ ধ্রুং । কে জানে কালীর মর্মা, নামে নাশে ধর্মাধর্ম, উপাধি হইলে শূন্য, আপনি দের ধরা ॥ * ॥ জ্ঞান কর্ম পরি হর, অন্য চিন্তা দূর কর, কালী বল কালী কর, নয়নের তারা ॥ * ॥ নাথ আজ্ঞা অনুসারে, চিন্তা কর চিন্তাগারে, স্থপনে কি জাগরণে, না হও পাসরা ॥ ১ ॥ কহে রামচন্দ্র নরে, এবার বহু জন্মান্তরে, সকল মানব দেহ, বিফল না করা ॥ * ॥ জ্ঞান ভক্তি সহভাবে, শ্যামা পদ ভাব ভাবে, চিন্তার চিন্তা দূর হবে, অচৈতন্য তরা ॥ ২ ॥

काली दिखान दिवन, (य एएएथ यमन खाद तम वरन

তেসন । ধ্রং । অধন্ত মন্তলা কারে, সে বিরাজে সর্বাধারে, ব্যাপ্ত শুপ্ত চরাচরে, যেখানে যেমন ।। #।। প্রকৃতি পুরুষা কারে, সৃষ্টি স্থিতি লয় করে, এক ব্রহ্ম দিতীয় নাই, বেদের বিচারে ॥ #।। অনন্ত নাপায় অন্ত, তাহে নর সদা ভ্রান্ত রামচন্দ্র হয়ে ফান্ড, চিন্তা শ্রীচরণ ॥ ১।।

রাণিণী টোড়ি। তাল ধিমা তেকালা।।

বিরাজে হৃদয়ায়ুজে, মণি মনিরে ওকে তিমির হরে ॥ ধ্রুং॥ ত্রিপঞ্চারে শিব উরে, মদনাগারে॥ ক্ষ ॥ বিহরে আনন্দ ভরে, নিজ তনু না সম্বরে, দিগম্বরী দিগম্বরে, গরবো করে॥ ১॥ সুপ্রসমা শামে রসে, অলসে না বাজে কেশে, ভুভঙ্গী মধুর হাসে, কাম জয়করে॥ ২॥ কামান্ত कारमत जरत, जरत घरत नवाकारत, मित्र' ताळा श्रम जारत, निर्जत करत ॥ ७॥ करह तामहत्त्व मरत, य जारव मिक्सिशास्त्रत मिकिशास करत जारत, मर्खास हरत ॥ ६॥

উক্ত রাগিণ্যাং।। আড়া **তালেন** সীয়**তে**।।

মনো নয়ান অন্তরে, সদাই লুকাও গো ।। ধ্রং ।। ভাবিলে
না পাই দেখা, এই কি সন্তবে গো ।। ক্ষা দেখিতে যতন
করি, তোমার ভুলি অন্যে হেরি, থাকিয়া অন্তরে শ্যামা,
করো গো চাতুরী। ভুমিতো বিষম মেয়ে, কে তোমারে জানে
গো ।। ১ ।। বেন স্থ্য প্রতিনিমু, প্রকাশয়ে যথা অয়ু, অন্যথা
অদৃষ্ট বস্তু, দেখা নাহি যায়। রামচন্দ্র দর্পণেতে, দেখাও
রাক্ষা পদ গো ।। ২ ।।

শ্যামা আমার অন্তরে জাগো, কি ঘুমাও গো। গ্রুণ। তিরি ধনো করে চুরি, মনে। চোরো ভার গো।। গ্রু।। অরা জক এই পুরে, কামাদি ডাকাতি করে, নিত্য বস্তু নাত্র হরে, ছুইয়া নির্ভয়। না মানে দোহাই তারা কি করি উপায় গো। ১।। সুদৃচ বন্ধন করে, কেহ বান্ধে কেহ মারে, উদ্বেগ বিষম বহি, দিয়া দাহ করে। তাহিই রামচন্দ্র, মরি

উক্ত রাগেণ।। খররা বাকওয়ালী তালেন গীয়তাং।।

यादि खिछ पूत दिला, इहेल जाद कि दिनिया. जय नाहि दि जू बकाकी हहेया। धुर ।। मयल होन द्यात लखनादत मयल कि तिया, जददित दाकादत महाजन स्थादन पाहिया।।*।। ज्वित जलन प्राप्त महाजन स्थादन पाहिया।।*।। ज्वित जलन निर्मा द्यापिया। ১।। जव जल जलनियि, शांत ह्वांत बहे दियि, काल नाम जत्री कित्या।। २।। ज्वानम शांल जेंड़ा देवा, द्वांत वाया जादेवा, द्वांत वाया जादेवा, द्वांत वाया जादेवा, द्वांत वाया ज्वांत वाया ज्वांत वाया हिया।। २।।

উক্ত রাগে।। কওয়ালী তালেনগীয়তে।।

কের্দে হরকে গুণ গায়েঁ। মেই, ঐরী মেরি মনহি ভট্কে, দূষণ মোমন মোহমে আট্কে ॥ ধ্রুং॥ জনন মরণ করি বাম বালাইরা, জনম জনম মে বৈরী ভেইলো, হরকে হরে ধ্যান জ্ঞান সব, সগুণ কে সুথ মট্কে ॥ ১॥

সারিগম পধনি গায়ে জো, সোয়ী গুণিন্মে গুণি কহাওয়েঁ নির গুণতে সব গুণ উপজাওয়েঁ ।। ধ্রং।। হরণ কে মুরঞ্জন লাও রেঁ, আপনা ঘটাম রাম দ্রগাওরেঁ, ধক্ট বি ধি কট্ ধোঁ ধোঁ তাবৈ তাবৈ রঙ্গ জে! লওরেঁ ॥ ১ ॥

त्रांतिवी मिक् मात्रक ।। वान এकजाना ।

চলিলাম ভাই ভোলার হাটেছে ছে যার সঙ্গের সঙ্গী
দূর।। ধ্রুং।। কেহ বেচে পুড়বার্গ চরি, কেহ করে ক্রয় যতন
করি, ভক্তি ভাব জ্ঞান রতন ভূতি, ভবর দোকানে প্রচুর।।১॥
কেহ বেচি গেল পুণা পাপ, কেংককেবল কথার আলাপ,
কেহ বেচি গেল তৃতীয় তাপ, কেং অবিদ্যা অঙ্কুর।।২॥
দেখ হাটের বেলা হইল ক্ষয়, রামান্দ্র এই উচিত হয়,
জ্ঞানসহ ভক্তি করিয়া ক্রয়, চলিচল জীপুর।।৩॥

আইলাম ভাব এই করিলা এবার হারালেম্
ছুকুল। ধ্রা চিত্র কমল কুছো লেখা ভুমে পড়ি অলির
ভাঙ্গিল পাখা, নাপার গন্ধ মর্ব তথা, ালির স্থুলে হৈল
ভূল।। ১ !! বিষর প্রান্তরে মর্ব চিকা, জলমে বালি বেড়াই
চেখা, প্রান্যার পিপাসার চেকা, নাপেল্যদীর কুল। ২ !!
বিষম মহা মারার এই কল, চিনি ব্যলেখা ওবার নিমের
ফল, রামচন্দ্র হত বুদ্ধিবল, তার হারাইল মু।। ১ !!

রানিণী সুর্ট সরা ।। তাল একভালা ।।

मनदि काली काली विद्या । ध्रः ॥ प्लिट्ट शांश श्रृंग, जादि कित मृना, ध्रुगम प्र प्र प्राप्ति। प्रता । * ॥ जाउद जाउदा, निक्य प्र प्र (जामादि), जादि निक्य के निक्ष निक्य । अहे दि माधि, कदि। निक्व कित जीवित के अधि माधि माधि के कि निक्य जादि । जावित कि मुक्त के लि निक्य जादि जादि । विद्या कि निक्य के निक

মন যদি ভাবিবি 'লি ।। প্র । ভেঙ্গে যাবে বাসা, নাহি
হবে আসা, আমার 'মি এই, যাবিরে ভলি ॥ ৠ ॥ ধরা
শ্যাসন, দিগেরি বন, নাগেরি ভূষণ, ছাই মাথিবি ॥ গায়
হাছালা,গলেহাড়ালা ভালে শশী, জটার গলাকেলি ॥>॥
হবে সর্বনাশ,শ্রাপ্নতে বাস ঘরেই মেগে, খেরে বেড়াবি ॥
বিষম পেটের জার্গাবি ভাঙ্গে হালা, নাহিতে গাইতে,
পাড়িবি ! লি ॥ ই রামচন্দ্র গায়, অন্য চিন্তা যায়, আপন
চিন্তায়, দেখে কোলী ॥ নাহি কালাকাল, ভরকরে কাল,
হাতে দেখে ভা কপাল খুলি ॥ ৩॥

স্কুলয়ে দেখনে কালী ॥ ধ্রু ॥ গেছে তব তয়, নাহিক সংশর
নিছা কেন আর, করো বাাকুলী ।। ক্রি ।। ভোমার এই ঘটো
মহানায়ার পটো, আছোদন ছিব, জোমারে বলি । প্রীনাথ
কর্না, করিয়া জাননা, যুচাইয়াছেন দিয়া, পায়ের ধুলি । ১॥
ঘটির বাহির, নহে কালী স্থির, স্থির এই কথা, কয়েছেন
শূলী ॥ আগমের কথা গোপন সর্ব্বথা স্থাপ কুলেতে, আছে
সে মেলা ॥ ২ ॥ রামচন্দ্র কৢয়, চিদানন্দ ময়, সাত্ত্বিক প্রেম,
ইহারে বলি ॥ হলে স্থির তয়, নাহি কোখাও ডর, সহজে
সেথানে, যাবিরে চলি ॥ ৩॥

বিষম সর্বানা মেরে। প্রা। করিতারো আশা, শাশানে তে বাস, দিগয়র বেড়ায় মেগে থেয়ে॥ ৼ॥ দেখি তারো কায়, বেদে পেলে লাজ, গুণগায় তার, কুঠিত হয়ে॥ দর শন ছয়, পেলে তারা ভয়,য়ৢল হৈল ভুল,গেলো ভুলিয়ে। >॥ ভাঘটনায় করে, ঘটনা সফতি, সফাতির গতি, দেয় ভূলিয়ে॥ একাশিয়া মায়া, কুহকের ছায়া, সদাই থাকে তায়, প্রক হয়ে॥ ২॥ রামচন্দ্র কয়, সেতো বিশ্বয়য়, সক্রয়ানে রয়, কিয় লুকাইয়ে॥ ভোগায় পুণ্য পাপ, নাহি করে মাপ, বলায় দয়াময়ী, কঠিন হিয়ে॥ ৩॥

রাগিণী সোহেনী॥ তাল একতালা। সামাল শ্যামা দুবিল তরি। ধ্রুণা ভব তরক্ষের দেখি রফ্ ভারি।। য়া কর্ম বাত স যায়া মেঘে সদাই পড়ে মোহ বারি। চঞলা চপলা ভানে, ঘনো ডাকে ঘটা করি ॥ ১॥ ভাঙ্গিল মাস্তল মন সুকর্ম বাদাম গেল পড়ি। তরী গরোক হয় আবর্ত্ত কামে, পাপের ভরায় হয়ে ভারি ॥ ২॥ ভানে স্থ্যা অন্ত হৈল অজ্ঞান তিমির ঘেরি । একুল ওকুল ছকুল পাথার, হত লৈ বুদি দারি ॥ ৩॥ ভেবে ধনদ রামচন্দ্র, উপায় শুনা হৈল তারি। করুণা লোজর কর তায়, কর্ণধার করুণা করি॥ ৪॥

সাথের ঘুনের ঘুন ভাঙ্গে না।। ধ্রং।। ভাল পেরেছোরে
ভবে কাল বিছান। ।। ক্ষা। পেনেছ সূথ শর্বরী জেনেছো
কি ভোর হবে না। তোর কোলেতে কামনা কান্তা, তারে
ছেড়েপাশ কিরোনা।। ১ ।। অসার চাদর দিরাছ গার মুখ
তেকে তার মুখ খোলানা। শীত গ্রীয় সমান ভাবে, ধোবার
ঘরে তার কাচোনা। ২ ।। খেরেছ বিষর মদ সেমদের আর
ঘোর ঘোচেনা দিবানিসি মুদে অঁথে, অলসে প্রকাশ পার
না।। ৩ ।। অতি মন্দরামচন্দ্র ঘুনাইরা আসা পুরে না। তোর
ঘুনে মহাঘুম ইইবে, ডাকিলে চেতন পাবে না।। ৪ ।।

রাগিণী সুরট জয়জয়ন্তী ॥ তাল ৰূপিতাল ॥ ঘট্চক্র বর্ণনা ॥

ফালা কুণ্ডলী ৰূপা কাম পীঠান্তরে, বিহরে স্বয়ন্ত নাম

निकालित मूनाधारत ।। धर ।। जिल्ला मूनून नाजी सिक् मश्रास्टरत, मरक मरवा वहि, भिक्रमा त्रेषा मिरत ग्री সুসুমু অন্তরে বজিনী শোভা করে, তন্মধ্যে চিত্রিনী বিদ্ नाज़ी शर्द्ध थरत, बात बन्नाथा मूर्च स्माक शर्य शामिनी, সুপ্তা অহি রাজ ব্রপা, সার্দ্ধ জিবলয়াকারে॥ >॥ বিশ তন্ত ময়ী ৰুচি কোটি দৌদামিনী, শ্বাস উচ্ছাস ক্রমে জগত জীব धारिनी, निन्मि म उर्जाल तप देवथेती नामिनी, कावा तम नवा করি, নবধা সে ভেদ করে॥২॥ আরক্ত কনকটল ৰূপ স্বয়ম্ভ শিব, লিক্সৰূপে পানকরে কুণ্ড গোলোন্তব, পূর্ণেব্দু विश्वकरता मखान शमी, कामीशूत वामी, विनामी विश्वं পূরে।। ৩।। পৃথী বীজ মূর্ত্তি ধরি বসিয়া গজেক্সোপরি, অঙ্কে বালাক্করিচি ব্রহ্মা শিশু সৃষ্টি করী, কন্দর্প বায়ু সহ জীবেশ মায়ামোহ, যত্র কুল ভৈরবী, ডাকিনী বাস করে॥।।।। গলিত সৌবর্ণ রুচি মূল পঙ্কজ শোভা, তত্র বসন্ত চারি পত্তে রক্ত প্রভা, ভেদী ঘট পদ্ম লয়ে হংসী হংসাগারে, ধন্যনর ধরণী তলে, ধ্যানে সঙ্গতি করে।। ৫।। নাম স্বাধিষ্ঠানে আরক্ত मरहा ९ थरन, नारक हलना ऋहि वन अस्वस्कृतन, अर्द्धकृ বংকারে বরুণ মকরাসনে, অঙ্কেবিষ্ণু স্তথা, রাকিণী নৃত্ কারে।। ৩।। ত্রিকোণ মণি পূরকে মেঘ রুচি পুক্ষরে, দিয় मत्न छक अन्त नीन•का छिधरत, तङ्गाङ विक विक मृद्धि धित

় রাগিণী সুরট।। তাল আড়া।।

मिकि श्रामा मा आमात, रेष्ट्राय शूक्ष रन कति एक दिरात ॥ धरः ॥ आगम निगम छेकि, नारि छात दिछीय मृद्धि, नामका छिक, नारि छात दिछीय मृद्धि, नामका छात ॥ ॥ उन्न मनाधनी जामा, आपि महाकान माधा, এकथा मन्या महाविष्णा नाम छात । निश्चना मश्चना वटि, श्रक्ष शूक्ष वटि, अनस्य उत्ता मश्चन कार्या मश्चन कार्या अभाव । निश्चना स्था अथा मश्चनाकारत, जार्या अथा मश्चनाकारत,

ব্যাপ্ত গুপ্ত চরাচরে, যে পদ দেখাইকা যারে, সের্ছা দেখা তার। এইতো কহিলা বেদ, ইছাতে মূর্থের থেদ, জ্বাল জানির নাহিভেদ, কালী কালা তার।। ২।। ইচ্ছা জ্বান কিয়া শক্তি, ভেদে হয় অবিদ্যা মূর্ত্তি, সেই ত্রিগুণ প্রস্তৃতি, নায়ানাম তার। ত্রন্ধা বিষ্ণু শিবময়, আদি নায়ায়ণ হয়, অংশী অংশ কলায়, সেতো নানা অবতায়।। ৩।। ইইয়া কুগুলী শক্তি, মূলাধারে করি স্থিতি, অজপায় ধারণ করেন্, জীব নাম সায়। রামচক্রে করিদয়া, নাশমা অবিদ্যা মায়া দিয়া রাজা পদছায়া, দেখাঁও গোসহস্রায় ।। ৪।।

काली कि मामाना। (मर्स, পঞ্চ প্রেতে প্রেতাসন রম্মাধার করিয়ে।। ধ্রং।। यात यञ्ज मूधा मिसू, আনন্দ তার এক বিন্দু, পেয়ে মৃত্যুঞ্জরী শিব, গরল খাইয়ে।। ৄয় ।। সূরপূর সির্মানে, কদম ক্সুম বনে, স্থান মণিদ্বীপনামে, চিন্তামিনি গৃহে। শবাকার মহা মঞ্চে, পর শিব পরিজক্ষে, বিহরে রহসি কালী, মুক্তকেশী হয়ে।। ১।। শ্রামা মা মানস চরী, চিদ্ ঘনানন্দ লহরী, ঘটেই বাসকরি, আপনি লুকার । ভ্রেত্তুর্ধনা নরে তারে, অন্যে কি লক্ষীতে পারে, ভাবে রাসচন্দ্র, অন্ধ হারায়ে।।ই।।

কি কায আর সাধনে, হৃদয়ে দেখরে কালী বল

विश्व । अहि । नापानित वर्ष जान । का विश्व नित निर्मा नित निर्मा करते निर्मा करते जाने । अहि । अहि । अहि । विश्व नित नित जाने । ताम । विश्व नित जाने । ताम ।

किकान चर्त श्रादिष्मिन, खादिए धकान रिन मिकान आहेन।। श्राह्म ।। कानीश्रम ना विखित्त्र में, कात्न द्र दर्भ कान् हात्र हेत्न में, जिल्ला कान् लिए हात्र हेत्न में।। काल कान नीन हर्ति, कार्तन मक्ति नामिर्दि, तर्दि महा कान किवन, कानी श्रमाश्रद्ध। कानीत कक्ष्मा दित्न, खेशाय नाहिक खारन, तामहक्क मिहा नुक्क, खामाय तहिन ॥ >॥

রাগিনী **মূলতান** ॥ **উক্ত তালেন গী**য়তাং॥

ভাবরেই মন জীনাথ চরণ, মুক্ত হবি এবার যদি এভব বুদ্ধান ॥ ধ্রুং॥ ভোমারে করিয়ে দয়া, সে দিয়াছে পদ ছায়া, অনিত্য বিষয় মায়া, কর কিকারণ॥১॥ বিকায়েছ যার পায়, লা দিলি দোহাই ভায়, কি করিলি হায় হায়, ধিকরে জীবন ॥২॥ কহে রামচক্র নর, গুরু পদাভায় কর, চলোরে চলো याहे, মনো জানক কানন্য প্রা হংশ পিঠে জীনাথ পদ, করি দরশন্য শ্রা জ্যোতির্মন মহার্ম্য, নহে বেদ বিধিন্নম্য, চক্রস্থ্য গতি শূন্য, দহন প্রন ॥ ১॥ পর্ম জানক ধাম, ব্রহ্মানক পরিণাশ, নির্ত্তি সকল কাম নাই জরা মরণ ॥ ২॥ কহে রাম্চল্র ভাবি, পর্ম জানক পাবি, নিতা সুথে চলে যাবি, দেখি জীচরণ॥ ৩॥

ধনা শ্রীরাগিণ্যাং। উক্ত তালেন গীয়তে।।

ভাবরে পরমা পদ পরম আদরে। অন্তর্যাগে সাধ তারে
ভাবেরো মন্দিরে॥ ধ্রুং॥ হৃদি পজে ত্রিপঞ্চারে, স্বাকারো
শিরাধারে, মহাকাল উরে সেতো, গোপনে বিহরে॥ ॥॥
অমায়া অনহস্কার, অব্যক্ত অরাগ অমৎসর, অমদ অমোহ
অলোভ অক্ষোভ অদ্বেষ আর। অহিংসা কুসুম সার,
ইন্দ্রিয় নিগ্রহ কর, জ্ঞানদয়া ক্ষমা পঞ্চদশ, পুল্প ছারে॥ >॥
হৃৎপজে দিয়া আসন, সুস্বাগত বাক্য দান, সহস্রার
চ্যুতামূতে পাদ্যের বিধান। মনোঅর্ঘ্য নিবেদন, তন্ত্বামূতে
আচমন, স্বানীয় তাহাতে মধুপক্ষ, বোড়শারে॥ ২॥ অম্বরহ
দিয়া জ্ঞানভূষণে ভূষিয়া, গন্ধ গন্ধ তন্ত্ব চিন্ত পুল্প প্রকিপিয়া।
পঞ্চ প্রাণো ধূপ কর, তেজদীপে স্বান্ত হর, অনাহত স্বানী
ঘন্টা, বাজাবে তৎপরে॥ ৩॥ সুধার্ধি সহস্রারে ক্রিবেদ্য

তির তাহারে কাম কোশ অলা বাহ বলি কর তারে। শব্দ তত্ত্ব প্রতি নীত, ইল্রির কর্ম তার নৃত্য, ভাব তরে পুসাঞ্জলি তার দিয়া তারে॥ ৪॥ অকারাদি লকারেতে অমুব্রোম বিপ রীতে, ক্ষকার সুমের করি গাঁথ কুওলীতে। বর্গার্টক অন্তা করে, অন্টোব্তর শতবার, বর্ণমালা জপমত্র, দিয়া তার অন্তরে ॥ ৫॥ জ্ঞানেতে চৈতন্য কর নাভিকুণ্ডে বৈশ্বানর, আছা বহি ঐক্য ভাবে, মন ক্রব কর। সমিধ তায় ধর্মা কর্ম, হবিভার ব্রুক্ত কর্ম, পূর্ণাহৃতি দিবে মায়া, বহি জায়া স্তরে ॥ ৬॥ দক্ষিণায় দক্ষিণা হবে যে কিছু সম্পদরবে, প্রসা সাক্ষে এবার ভবে আরো না আসিবে। কহে রামচন্দ্র নর, সর্বদা এই কর্ম কর, সাধন কি কথার কথা, মুক্ত ভবান্তরে ॥ ৭॥

আছ শ্যামা মা আমার অনাহত ঘরে, দ্বাদশ দলেতে
সদা কঠান্তে বিহরে ।। ধ্রুং ।। ঈড়া নাড়ী স্থিতা বামে, পিঙ্গলা
স্থাকিণ ধামে, সুসুমাত্রিগুণা মেরুর, অন্তর অন্তরে ।। * ।।
বুট কোণ আকার তার বন্ধুক কুসুমাকার, যমিতি বায়ুবীজ
তায় ধূদ্রবর্ণ যার । বাণাখ্য শিবলিঙ্গ তায়, কনক রুচির
কায়, কাকিনী চঞ্চলা রূপা, কুফ্লারোপরে ।। ১ ।। মূলাধারে
তিকোণেতে বালান্তে চারি দলেতে, লমিতি ধরাবীজ তায়
নিশিরা শোণিতে। নবীন সুর্য্যের অংশু, জিনিয়া পরম শিশু

ভাকিনী ভৈরবী শক্তি, গজোপরে । ২ ॥ বিশুখ্যি নাড়ীর श्रुरिथ जिरेकानीरथा श्रुरत मूर्य, विमास कमार्थ बाह्य बीव যার সম্মুখে। বয়ন্তু লিঙ্গ উপরে, বেটিত ভুজ্ঞাকারে, ্বিহরে কুল কুগুলী, এন্ধ স্বারোপরে ॥ ৩ ॥ অর্ধ ইন্দু षाकारते वर बत मूल रिंग्सर्क, न्विमिक वसने बीव मिन्नूत मिखिटा यफ़ मन वन अर्थ, प्रकतामत्न छेला है, ताकिनी दें রবী সহ, ত্রিবেণীর তীরে ॥ 🕏 ॥ নাভিমূলে ডফ অন্তে রমিতি বহ্নি বীজেতে, পূর্ণ মেষ্চ্যুতি হরে, ত্রিকোণাকারেতে। বৃদ্ধ রুজৰপী শিব, সিন্দূর বরণ রাগ, লাকিনী ভৈরৰী সহ, মেধের উপরে।। ৫।। বিশুদ্ধে বর্জুলাকারে ধূদ্রাভা আকাশোপরে; রক্তবর্ণ সোণস্বরে আছে। যোড়শারে। বিষ্ণু শুক্লায়র ধারী, भाकिनी नाटमटल नाती, काटन (माटन इत्रांती, नाटनत উপরে ॥ ৬॥ অজ্ঞাচক্রে যোন্যাকারে হক্ষর্বর্ণ ভচ্নপরে, ঠমিতি চন্দ্রবীজ তায় অমৃত সঞ্চারে। লিঙ্গরূপী শিবেমৈলি, हाकिनी टेंज्यवीय किल, मकल हेटल्य बाक्रा, मरना वाम করে।। ৭।। দ্বিদল উর্কে মহাশূন্য জ্যোতির্মার মহারম্য পূর্ণ ভগবানের স্থিতি যে ভাবে সেধন্য। প্রণব সহ স্থির**া** वाञ्च, त्याशी ताद्य त्यादश आञ्च, महानाम क्ली निव, अक्कान भटत ॥ ৮॥ अकथानि जिटत्रथाटि घानम नटनत अटस्, श्रेत्रम শিবের সহ মিলিয়া একান্তে। সহস্রারে আছ ঢাকা, ভারিকে ভাবী পায় দেখা, রামচন্দ্র শিবের লেখা, বুঝিতে কি পারে 🗱।। আরে আমার মনরে কাচিন্তা ভোমারে, দেখরে বিনাথ প্রায়ি ভোমার ভবের বালারে।। প্রং।। প্রামানাম চিন্তামনি, নাথ দিয়াছেন আপনি, অসুন্য রতন ধন্ব্যাপারের তরে।।।।।।
ব্যাপারী যভেক আছে, বেচাকেনা তারি কাছে, বিগুণ ব্যাপার করি, গোলার হয়েছে। চিন্তামনি পূঁজি তব, ব্যাপারে করি, গোলার বর্মার ব্যাপার কর, আপনার ঘরে।। ১।।
হইয়া ব্যাপারী দঢ়, বুঝিয়া ব্যাপার কর, সন্তাবিয়া শহা জনে, কেনো সওদা তার। লেনা দেনা স্থল কর, কমির আশা পরিহর, বাতিবে পূঁজি ভোমার, কহে রাম নরে।। ২।।

আরে আমার মনরে ভব পারাবারে, নিস্তার ঘাটে তরণী বান্ধা রয়েছেরে ॥ ধ্রং ॥ জীনাথ কাণ্ডারি যাতে, কিছু ভয় নাহিভাতে, করিয়া সাহস তাহে, চড়োগে সত্মরে ॥ ※॥ নির্ভি নামেতে ভরী, তুর্গমেতে চলে ভারি, নিগুলেতে থাকে বান্ধা, শূন্য তাহে দাঁড়ি। মানস বাতাসে চলে ইচ্ছাময় পাল তোলে, কথনসৈ নাহি টলে, বিষম পাথারে ॥ ২ ॥ নাম রত্ম ধন কভ, থাবি যছো পাবি তত্ত, অভিদূরে মাবি কিছু, যেতে যারি ত্ররা। যথন যথা আরাম, সেথানে পাবি বিশ্রাম, মুর্বাদা তায় শুভক্রন্ম, কহে রামনরে ॥ ২ ॥

গিরিরাজ্বহে সানিতে উমারে, কে যাবে পাঠাব

कारत, टेकनाम निबंदत ॥ अर ॥ मक शूब टेक्न लोके देवनाक সকল জ্যেষ্ঠ, অবশিষ্ট ছিল সেত, গত নিজুনীরে। । 🗣 ॥ किवर्षि मात्रम जानि, मम निक्षात्म वनि, कहिल एयनव कथी কিকব তোমাবে। ভিথারি ছুহিতারপ্রি, সদাই তার অসং, क्रि, नरपाम्य रमनार्थिक, मूख यात घरत्। ५ ॥ श्रक निनि जनगटन, जैमादत दाशि अन्दर्भ, जादक मृज्यदत जामां में আছ্গো ঘরে। পিতা মাতা আছে যার, তারকি এই ব্যব হার, আপনি আসিতে নারি লোক লজ্জা উরে ।।(২ু॥ শরদে শারদা বিনে, কিনপে বুঝাব প্রাণে, কহ কহ গিরি বর, কে আছেহে ঘরে। বিশেষে মায়ের গণ আশায়ে আছে ধারণ, অবশ্য আসিবেন উমা, সংবৎসর পরে।। ৩।। विवादन विवान करत, स्मनका ना देशर्या धरत, व्यवन जनक হয়ে চলিলা সত্বরে। কহে রামচন্দ্র দ্বিজ, তিলেক নাসহে वाक, य कारन रम कारन कूर्ता, कारन यात व्यक्तत्व ।। ह ।।

अटह नशेतां क एहं तिहर नितिष्यतं, मेत्राम मात्रमा विना क्रमत विमरत ।। धनः ।। आन्छान् करत श्रान्, मृक्ति मा इस मन, मावाधि इतिनी रयन, वाक्रम। अद्धतं ।। ॥ । मद्य माज अक धन, नत्रान नवीनाञ्चन, अद्भटन मुख्य निधि, विधि मिल भारत । कि विलय विधालाद्धं, स्माधि खादत मश्यक्तात्, कृथ भारत्वात ममा, जेथरन अख्यतः ।। ऽ।। मात्राम

निक्तांतिनी ॥ छात्र व्याजा ॥

क्रुशिकि ज्निनि मार्गा जामारत व्वात, जिन्नानिनी कार्ल तानी, वरण जनवात ॥ ध्रः ॥ त्रशत कि जागतरा, जारग क्रुशी यात मरन, क्रुशी विना मर्नाक्ष्थ, रक्ष जानिरव जात ॥ ३॥ त्राची ज्ञानिमिथ्य कात्र, देक्सार्टनत श्रक्तियात्र, भतरमत निन यात्र, जारत, वात्रवात ॥ २॥ तामक्क नीरन जारव, क्रुशीशन तक्ष जारम, क्रुल ज मान्द ज्ञू, श्हेरदिक जात ॥ ७॥

আসিতে^{ট্র}বিক্**ষ কেন হইল রাজার, কে বাবে আনি**ত্র উনাত্র শুভ সমাচার।।^{ট্}রং।। শরুকের দিনগভ, মনেরে वृकाय करु, हुआंटक कहिंदित खाल, या हुन कामाह ॥ > ॥ हुनिनी जननी दाटक, हुआं दिन शंग जूटक बद्दक हुने हुने हुटल कि मांच जारात ॥२॥ शंक खात महत्त काम, बानहरस्त किन शंग, हुआं पनि करता हुन, रक करत केहात ॥ ७ ॥

ললিত রাগিণ্যাং।। উক্ত তালেন <mark>গীয়তে</mark>॥

যাৰহে নিশি প্রভাকে, হিষালয় এনেছেন আমার नहेर्ड ॥ धुर ॥ পতি चालु তোৰ बात, त्नाव छन जूना जाड़, তথাপি জীমুখ আজ্ঞা, বিনাকি পারি যাইতে।। #।। कि कद অননীর জুঃখ, বিধি তারে বৈষুধ, ছলে শতপুত্র তার, ছরিল তাবত। মার্বলিতে নাহি ঘরে, সে ছুখ কহিব কারে, বিদর্শ্বিয়া যায় হিয়া, মায়েরে মনে করিতে॥ ১॥ আছে পিঞা মাতা যার,সেজানে যন্ত্রণা তার, অনাদি পুরুষ ভূমি, 'নাহিং ভোষার। হত পুত্র। মম মতো, ভূষিত তারি জামাজ **এই**ठ উচিত হয়, याই চল **ছুबना**एउ ॥ २॥ রতন তুমি, ভোমার কি কব আমি, আমার বে দেবি नक्षि विक्रित्र । निर्देशन द्राक्षाशात, व्यविष्ट्य क्रिये অমুমতি কর হর, জনক খর যাইতে ।। ওঁ 🖞 हिना इत, वारेट बनकवत, बानटम बामम मन्नीत, श्राह অস্কর। কহে রামচন্দ্র মর, বিলম্ব কি আছে 🛒 ब्लाइर वन, क्रुनी बादव टेक्नान व्हेटक ॥ ८ ॥ ्

अ कालारका ज्ञानियों । उन्हें बाउं।।

अस्तरमा अस्मादमा छूर्गा मक्ता जामात, छूथ पृदत्रदर्गन ি**হে**রি বুদ্দ ভোমার া ধ্রুং ৷৷ ভালের তাপিত দেহ দহে नित्रस्त्र, नी उन करत्था छूर्ता मार्वाटन अकवात ॥ 🗱 ॥ अटनक সাধের ভূমি তোমার লাগিয়া, করেছি কঠোর তপ বিধি আরাধির। কুলছমানক করী ভূমি গো আমার, নয়ন পুর্থলি ছর্মা, প্রাণের সাধার 🕸 ।। সংবৎর আছি আশা পৰ নির্থিয়া, আজ্সে পূরিল আশা ওমুখ চাহিয়া, উথলিল স্থানন্দের সুখ পারাবার, নাহি উপরম তার, বাড়ে व्यक्तियात् । २॥ मैकलार्टत मेक्लिया लब्न वीमन्तिरत, व्यानत्नत्त्र नाहिक ७ त हिमाल स भूटत, जानक मही नकिनी ভবनে याहात, नक्षण जूदबंद निधि, विधि मिन छात ॥ ७ ॥ नार्थक जीवम তার সেঁদ্রেই বারণ, শরদে শারদা পদ করে আরাধন, করে রামচক্র দিজ জন্ম নাহি তার, শিব উক্ত সেই মুক্ত, ঘুচিল मश्मात ॥ ।।

ুবাগেত্রী কালোড়া॥ তাল মধ্যমান॥

আজকি আনন্দ, গিরীন্তা, আনন্দময়ী ভবনে।। এই।।
নামছ্থ দুরেশেল, বিধি নিধি মিলাইল, সৌভাগ্য উদয় হল,
নামলার আগমনে।। ।। ।। শরদে শারদা ঈশা, প্রসন্ধ যে

मन मिना, मूळकान इत्याद्य सिना, खंखन इन्हें जानका महीत द्वार मिना महीत द्वार मिना महीत द्वार मिना महीत द्वार महिना । २ ।। क्वार महिना ।। २ ।। क्वार महिना ।। २ ।।

शिति छेमा मह्म, श्रमहम, जानिना घरत कात स्मरत्त ।। धरः ।। मर्कारम राज्य (मह, क्रिंग क्र्रे मिरताइस्, जामात छमा नरह धर, प्रथ प्रथि मुथ (हरतः ।। क्रिंग क्रिंग, मश्माप्त जामात । छमा क्र्रे क्र्या क्रिंग, धरे ना कि त्मरे छमा, मश्माप्त जामात । छमा क्र्रे का हिन, मश्रे का कर्व देशन, हिम शिति मछा वन, कत हन भी हिन, मश्रे का कर्व देशन, हिम शिति मछा वन, कत हन भी हिन, प्रश्ने का कि जामात । जात धिक वम्पत्त मूठे, जारत करत जाना । ।। एमिश्रे धिक विभिन्नी । जात धिक वम्पत्त कमा। नरत ॥ २ ।। तक क्रवा विनुपत्त, भूरक व्यत्त वात, धरे करवा वात । विक्रं तामक वाती, खनरह नरमक्रत तानी, धरे ठ उव निम्मनी, छारव नर्ख महति हा ।।

উক্ত রাগিণ্যাং।। আড়া তালেৰ গীয়তে।।

रहतिरंत इत्रा कृती कृति वामात, कृमि महामात्र

जित नाशा करह नितस्त ॥ अर ॥ चनानि क्कर्म (यान, जानाम कि कि जान, महिमा मामात ॥ अ।। यमानि चनानि निष्क, जीव त्म जाविमावाधा, नाहिक जीवत नाधा, कि जिल्ला छेना । जामात हेन्छा अवना, मर्मुष्क इस त्मना, तिहें जा जत्त जिल्ला, जा जा जा जा जिल्ला कि की नित्म कि जा जामात । तामात है जिन की जामि मान, कहें एक इस छेन्छा नित्म नाहि जान, कनक जामात । तामान ने स्व नत, जात जानी कात कर, नित्म मान्य कर्या जात, जात जानन कि कर ।। २॥

त्रांशिनी मूबरे॥ जान व्याका

वन मा इतित घरित, क्यांत आहिना हुई। किनाम निर्धात ॥ धुर ॥ जामाजात मारे धन, किन मिन जाजतन, अजिनिन जिक्कांचेन, क्यांचनी नगरित ॥ ॥ वनन जाजित इति, इसिह्न निर्मात, कथनर भिरत भार्ष्मृन जामत । विजा जन्म कर्णादित, विच विद्व कर्ष्ण धरित, मश्ची कामात जार्य, श्रीतमाह भिरत ॥ > ॥ स्मिका नार्यना जात्म, वन्नमती नारि जात्म, जालन कमा कित मार्यन, हुई। सिन्छत । वाम विक्ष करे जात्म, हुई। श्री श्रमत जार्यन, कर्मार मार्यन वार्यन, (पथा मिन्न जारत ॥ ई॥

[<]

রাগিণী বারওরা।। তাল ঠুংরি।।

যাবি কি ভবনদী পার, পাষর দ্বন আমাররে, নাই
ক্রুলে ভরণী ভার ।। গ্রুং ।। নাহি ভরকের রক্ষভক্ত, কাটে
ছুইধার ॥ *।। চৌদিণে গগন, ঘটা, হরেছে আমার,
কর্ম মন্দ রামচন্দ্র সন্ধ্যা হল ভার ॥ ১ ॥

বিরাজে শ্যামা হৃদরে যার, শত দলেরে, কি কায আর সাধনে তার।। ধ্রং।। সদানন্দে সদানন্দ মরীর বিহার।। #।। দৈত শূন্যে চিস্তা শূন্য হয় নিরাকার, নাহি মানে ভুক্তি মুক্তি ভক্তি অঙ্গীকার।। >।। ধর্মাধর্মে কর্মে নাহি করে পুরস্কার, রামচন্দ্র তারিসঙ্গে শ্বে মায়া পার।। ২।।

কালো ৰূপ নয়নেতে যার, লাগিলরে, গেছে ধরুমা
ধরুম তার । ধ্রুং ।। অন্তর বাহিরে হরে মারা জল্পকার । क।।
ব্রহ্মানন্দ আদি সুখ নিছনী তাহার। দেখিয়া মাধুরী তারি
মন জুলে ভোলার ।। ১।৷ রামচন্দ্র কর্মা বল্প জাবি মারা পার;
কেমনে জন্মুল্য নিধি দেখ জনিবার ॥ ২।।

त्राभिनी **रेमन् ॥ जान जा**ज़ा ॥

কালী এই কুজনে ভবে করপো নিস্তার। জননী আমার

कृषि व्यक्ति एकामात ।। उक्काट ख व्यक्ताध्म, दक व्यक्ति हो। क्रिया मम नम, क्यांवि व्यक्तिशी, दक लहेद व वात ॥ क्र ॥ क्र विकास, क्र विवास, दक्ति वात व्यक्तिम, क्र विमास, क्र विवास, क्र विमास, दक्ति क्र विद्याम, द्वामा, द्वामा वाणिल व्यामा, उपम विमा व्यक्तम, मा दिश्वामा, उपम विमा व्यक्तम, मा दिश्वामा, वाक्ति व्यक्ति व्यक्ति क्र विमा व्यक्ति विमा व्यक्ति विमा विद्यामा विद्य

वापि कि रहित्याम भामा प्रतिशक्षिनी, नहन निर्मल करत मेंने तंक्षिनी।। अर ।। काणि भामकास्ति मनी, मूस्ति। क्रमातामि, पिश्वामी मूक्षकिमी, (क क्रमी भवामनी।। #।। श्रमूल नीमकमन, नरान जरा निर्मान, श्राण्ड दिव मश्रम, पाइ दि जाहात । कारमत कार्म्म क नार्क, पाकर्ग कार्म, मनिरक स्मारह निर्मित, हाक हानिनी ॥ ১ ॥ श्राप्ट मृतन निर्मा निर्माण, कलातन, पाई हिमारस्थ, हत्रगकत नश्रद्ध श्रूर्णम्मू छेनत । मूठीक्ष कलाण करत, वतां कर मृश्रभरत, नत नित हात छेरत, नत कर किकिनी ॥२॥ श्रामालम स्काकनम, जिल्लास्कर मन्त्रम, नीमक्छे हिम जुम, प्राधार्त छाहात । विहरत प्रामम्म छरत, निक्का ना महरत, तामहन्त्र हिस्तां गारत, तिहलि विष्

आपि कि रहितलाम श्रामा मिलिडाक्षनी, नयन निर्माण करत मत्नातिक्षिणी।। क्षर ।। अमल पन घर्षा, लिक्किड मामिनी हरें।, विकार पन कर्ता क्षित अमन कर्षा, कात तमणी।। #।। मूथाकत अर्क जातन, मेर मिल्ड क्षण्डिमूल, नाक्क् मकताकृति, मिल क्ष्युल। वालाक नयन कात्न, हरायह आमर शातन, क्षण्डमी जिममा अठि, नव तिक्षणी।। >।। क्ष्म श्रूष्ण मर्श नात्म, हात्म मल मूख कात्म, थंगशिड हक्षु आमा, नामा विनात्म। किमत क्रमूम कात्म, थंगशिड हक्षु आमा, नामा विनात्म। किमत क्रमूम कात्म, विनात क्षण हिंदा, मूल्जा विणी।। २॥ विश्वलिड क्ष्म कात्म, शिड्ड हर्ता, मूल्जा मिली।। २॥ विश्वलिड क्ष्म कात्म, शिड्ड हर्ता, मूल्जा माला मूख माला, लिख गत्न। नात्म माज़ियत मुला केक्ष कृत कित कृत्व, विवनी नाशिनी नान्न, मरतांशिमिनी।। ७॥

করি কর পর্ক হরে, শোভা করে চারি করে, সুগু চগু বিশ্ব
আসি, চপলা আদরে। বরা ভয় করি করে, ভাকে সুরাসুর
নরে, দিগনাসী কামহাসী, মনোমোহিনী ।। ৪।। কেশরি
নিন্দিয়া কটি, শব কর পরিপাটী, রচিত কিন্ধিণী বর, ভ্রমর
বধূটা। নিতয় বিশাল ভাল, হেরি ভুলে মহা কাল, জানুজ্জ্ঞ্ল
কাম শক্ষা, দক্ত দলিনী।। ৫।। নব ইন্দীবর পদ, পদতলে কোক
নদ, নথরে লজ্জিত কোটি, চন্দ্রের সম্পদ। মরকত মণি কায়,
মুপুরের ধনি ভায়, ভাগ্য মন্দ রামচন্দ্র, শ্রবণ বঞ্চিনী।। ৬।।

উক্ত রাগিণ্যাং।। খয়রা তালেন গীয়ভাং।

শ্বামা চরণ কেমনে পাবি মন, শিব শব হুদে করিয়া শ্বান, যতনে করেছেন ধারণ।। ধ্রুং।। সুসুমা নাড়ীর অন্তর্গত, হুদি সরোক্তবে সঙ্গোপিত, নয়ন কমলে করি অর্চিত, লয়ে কুন্ ওপদে শ্বন।। ১॥ অনস্ত অন্ত না পায় যায়, শুনে হুরে সুরাসুর ব্যবহার, তুমি তুচ্ছ নর বিশেষে পামর, অশেষ প্রকারে কটিন।। ২॥ সতত বিষয় চিন্তাতুর, অতি দীন হীন রামচক্র নয়, ভাবিয়। উপায় নাহিক তাায়, ভরসা
শীনাধের বচন।। ৩॥

নিবিড় ঘন ঘন দামিনী দক্ত, হরে তা রুচি ষেড়শী

দ্বপদী, কে দেখেছ মেয়ে এমন।। ধ্রং।। আর্দ্ধ আক্র ঢাক্রা চিকুর জালে, মুখ পূর্ণ ইন্দু আধ ইন্দু ভালে, খ্রুতি যুগ মুলে, শব শিশু দোলে, নয়নে উদয় অরুণ।। ১।।

মন কি ভ্রান্তি তোমার। মনরে জেনেছ জানিছ, তথাপি ভাবিছ এমন কি সুখ আর ।। ধ্রং।। ধন জন পদ শূন্য হইলা, তথাপি বিষয় সুখ নাহি পাশরিলা, মুদিলে ছই আঁখি, সকলি যে কাঁকি, ভোমার কে তুমি বা কার ॥ ১॥ বেদের প্রমাণ তারে নামানিলা, শতসঙ্গে কত দেখিলা শুনিলা, যে বস্তু অনিত্য তারে মান নিত্য, জানিলা আমি আমার ॥ ২॥ আইলা বা কোথা যাইবিরে কোথা, রাম চক্র তাহে না পাইলি ব্যথা, আজন্ম ভাবিলা কি লাভ করিলা, না ভাবিলা পদ তার। ৩॥

উক্ত রাগেণ।। ধিমা তেতালা তালেন গীয়তাং।।

নাচে দিগম্বরী, শবাসনে, আসব পানে, তত্ত্ব মনের জুড়।
ইল হেরি নয়নে ॥ *॥ রুণু ঝারু সুমধুর, ঝার্কারিছে মধুকর,
বাজিছে মূপুর তার, ও রাজা চরনে ॥ *॥ সুথের নাহিক ওর, শিবাগণ ডাকেঘোর, গরবেতে চরচর আননদ ভরে।
ছলিছে কুণ্ডল ভার, চাকা শিব শবোপর, কে বুশিবে ভাব তার, নাধক বিনে ।। ১ ।। অর্দ্ধ শলী শোতে ভালে, শব শিশু প্রুতিমূলে, বরাভয় করা অসি, করা করালে । নরশির মুক্তা মালা, বক্ষরুত্ব করে আলা, বদন চাঁদের মালা, মেঘ বরণে ।। ২ ।। বোড়শী বয়সী রামা, ত্রিলোকের মনোরমা, ভুবনেশী গুণধামা, দক্ষিণা নামা। ওপদ পক্ষজ রজ, ত্রিলোকের বৈক্তব, রামচক্র অনুভব, এইসে মানে ।। ৩ ।।

एत्र नवक्षमध्त वत्री नय्दन, य পদপक्ष जव जत्र जती ॥ ध्रः॥ इम्य शक्ष माट्क, मिशयती इत्य नाटम, मूमन मध्त शाटम, मृद्धाविनी ॥ ॥ कृष्टिन कृष्ठन काल, माज्य मूक्जामान, नव ज्यमाच यम, पूर्व धत्री ॥॥॥ कृष्टिक मत्रकत, मर्काटक स्थित धात, नवचन माटक यम दित्र मामिनी ॥ >॥ तिव भनी छ्यामन, मूट्याज्य जिन्यन, वमन शक्र व्यान, किटत ज्यानी ॥ ॥ शश्म ज्याज्य विधू, मूधाधिक शिव्य मधू, इत्य मन नथ वामात, नथत मिन ॥ २ ॥ मूक्षम क्षे जात्म, माम्याम ज्यानाटम, मिवानिनि मूक्ष कृष्टम, ज्ञाम वत्री ॥॥॥ १९८५ य जन श्रामाक्ष्म, मिरे क्षाटन किरात मुथ, मटन कि इत्र जनानाथ, करें दम मानि ॥ ७॥

উক্ত রাগেণ। আড়া তালেন গীরতে।। শ্বামা গুণ ধামা অমুপমা, হেরি শিবের নরন ভূলিলো।। अर ॥ अकलक ममध्त, ठाका (यन कलधत, तोनामिनी चिक मानी, इत्त लूकाइन ॥ > ॥ मूथा जात्म ठिकातिनी, निभामात्र ठाठिकिनी, नील निलनी जित्म, जमती जुलात्र ॥ ॥ महा त्मच चें । जत्म, वक त्थानी छेत्फ त्यात्म, नांट्ठ मिथी इत्त मूथी ज्थत मानिल ॥ २ ॥ ठत्र त स्पूत्र धिन, मत्रात्मत तव मानि, मत्रालिनी मछ इत्ता, यूत्थर धात्र ॥ ॥ अञ्चलि भक्षमत, छात्क भिक मूमधूत, मनिक भित्र वाक, वमत्त माणिल ॥ ७ ॥ ज्वत जेभमा हीन, तक वर्गित धामाश्चन, वित्मत इत्ताह ज्या, मित्वत्त जुलात्र ॥ ॥ ।। कत्ह तामहळ नत्त, नवतम धक ज्वत, मृद्धित नह अखत्त, जमाधा इहेल ॥ ८ ॥

कि वामा मत्नादमा श्रामा। जूवतनी जृवन जूनाहेला। धः। ज्यथिन तत्तत निधि, मकन मूर्थत ज्यधि, देवमगिष श्रेगनिधि, श्रेराट वाक्षित्न ॥ ।। जननी हरेंग्रा शाल, कूमाती हरेंग्रा हत्न, कामिनी हरेंग्रा कात्म, मकनि जूनाग्र ॥ ॥ कात तम मूमाधा वर्षे, तक अज़ाद जात् निकर्षे, श्रेग हीना तम मश्रेगा, मकनि मकता ॥ २ ॥ मीन तामहन्त जात्म, गामाशम तक जात्म हत्यह महत्त त्यांगी, ज्ञिनातम यात ॥ ॥ ज्ञेन ना शाम ज्ञे, त्यम विधि देहन ज्ञास, किमश्र मूद्रनेत्र, शाद कि जादिल ॥ २ ॥

[40]

হ্লামির রাগেণ।। হরিতালেন গীয়তাং।।

तिर्दत औरिकलाम क्षामाधीश्वती, भवामतन महाकात्ल कार्मी ॥ ध्रः ॥ महाशीर्ष्ठ जिशक्षाद्ध, तज्ज दिमीत अखद्ध, छत्रानक भंजीद्ध, छादक मृगानी ॥ ॥ ।। अख्निपूर्ण तट्काष्ट्रभन नथद्ध विधू मख्न, मूथा चार्त्म छक्त मन, हरस्र ह हरकात ॥ ॥ ।। कित्रद्ध मिनस स्भूत वार्क । यन मूमधूत त्रव, कित्र ह मतानी ॥ > ॥ वार्ष्म खन्म मूख कता, मरक अख्य वता, वम्रम चार्म वार्म वार्म प्राप्त स्थानी ॥ ॥ कामिनी मोमिनी, मनाद्ध मूथा खत्म, ख्रु मानी ॥ ॥ कामिनी मोमिनी, मनाद्ध मूथा खत्म, अख्य खता, वार्म क्षाम वार्म वार्म खत्म वार्म काद्य वार्म काद्य एद्या प्रता चानम खद्ध ॥ ॥ ।। भिक्ष खानू जिनस्र , भव भिक्ष काद्य, मनः खूनाहेल भिरवत त्रारम्य, नसन भूवनी ॥ ७ ॥

ছান্নানট্ রাগিণ্যাং। উক্ত তা্লেন গীয়তে।

न्याया यारात मत्रवात ध्वात श्वात मह हुआ जात ॥ अः ॥ मत्रवानि निवा यात, त्कवा श्वात कथा कात, त्मछ त्यान त्यक्षन त्यक्षन मिछ प्रानात व्याकात ॥ ।। यहा न्यामात्वर चत्र, उथा याहेर्ड नार्श छत, त्मछ। त्यर त्यस्य त्यस्य वात होत ॥ ॥ ॥ याथा प्राप्ता व्याकात ॥ ॥ ॥ ॥ याथा प्राप्ता व्याकात व्याक्ष व्याक्ष

মাধা মড়ার খুলি, মুথে সুধা ধার।। ৩॥ কানে জবা এলোঁ চুল, রক্ত আঁথি চুলু চুল, ববম্ ববম্ করে তুল, অতৈত আচার।। *।। কালীদাদের হৈতে দাস, রামচন্দ্রের অভি
লাস, না ঘুচিল মনের ত্রাস, তুকুল আঁধার। ৫:।

উক্ত রাগেণ। জলদ তেতালা ভালেন নীয়তে।

কালীকুলাও গো এবার। আমার মনের অসুসার।। ধ্রং।।
তব পর্টের রতি মতি, হয়েছে তার অসঙ্গতি, করিতে চাই সুস
স্পতি, নামিলে উদ্বার ।। #।। দরিক্র করিলে ঋণ, দিতে না
পারে কখন, মিছাসে করে যতন, চেন্টা মাত্র সার।। ২।।দেখি
য়া দারিক্র দোবে, কেহনা সম্ভাবে দাসে, রামচন্দ্র এই ভাবে,
জমা শূন্য যার।। ৩।।

ধুমে হইলি বিভার, তোর ঘরে কাল চোর ।। ধ্রুং।।
এনিদ্রা স্বাধীন তোর, জাগিলে জাগিতে পার, ঘটাবে সে
মহানিদ্রা, নাহি হবে ভোর।। ১।। চৌর সঙ্গে ঘুমাও ঘরে,
নাহিক ভয় অন্তরে, করিলে চৌরেতে চুরি, কেকরিবে
সোর।। ২। কি সাহসে করি ভর, উপায় নাহিক তার, রাম
চন্দ্রের ঘটান্তরে, থাকিল এ ঘোর।। ৩।।

উক্ত ব্লাগেৰ।। হরিতালেন গীয়তে।।

ক্ষে আর কত দূর কালীপুর, শ্রীনাথ ঠাকুর।। ধ্রং।। দিন
ক্ষেত্র অন্ত, রাত্রিযোগে আছি ব্যস্ত, নিদ্রাভাবে কুগুলিনী, ন অলস প্রচুর।। ১।। চলিতে না পারি আমি, এদেহের দেহী
ভূমি, বামে রাখি মায়াপথ, দেখাও ব্রহ্মপুর।। ২।। সম্বল
হবল হীন, চঞ্চল চরিত্র মন, প্রপন্ন শ্রীরামচন্দ্র, সহজে
অভুর।। ও।।

কানোড়া রাগিণ্যাং।। উক্ত তালেন গীয়তে।।

कानी इन समित्त । आमात मानत्म विह्त ॥ ध्रुः ॥ नाि हि आनम् छत्त महा कानछत्त, हत्न सृभूत वात्क अमती श्रक्षत ॥ अ॥ कृश्चि हमती तक्तां आर्क मंगी छाता । अग्रहां में मुह्णां हत्मता हत्त ॥ > ॥ नीं निनी हेव तक्ष विश्वत , आभन हेक्स तिल्ल आभना मद्दत ॥ अ॥ अस्था अध्या अभि हत्त । अ॥ अस्था अध्या अध्या विश्वत हत्त, तामहत्त अनाहत् प्रति मह् आदि ॥ ७॥

কালী সকলে সকলি।। ধ্রং।।যে জন জানে সে কপালী / #।। জীৰান্ধা পরমান্ধা সেই চরাচর ভূতে, মায়াতে মাতিয়া মাতি, আপনি হয় মাতালী ॥ ১॥ নিরাকারা সাকারা সে দৈতাদৈত ৰূপে, ভাবনা ভেদেতে শিব, রামকৃষ্ণ কালী ॥ ২॥ ভাবিলে নিকট ভাবে অভাবে বৈতালী, রামচন্দ্রের্ নয়ন্ পথে, কোথায়ে লুকালী॥ ৩॥

উक्ত রাগেব।। অ্ব তালেন গীয়তে।।

বাংগ্লী কানোড়া রাগেণ।। উক্ত তালেন গীয়তাং।।

নাধন কঠিন মনঃ দেখরে ভাবিয়া।।ধ্রং॥ নাল ভয়ে কথার কথার মায়াতে থাকিয়া।। য়॥ স্বগুণ স্বভাব জীব বর্ণাশ্রমে থাকিয়া। লক্ষিতে না পারে পথে অজ্ঞানে আর্ত হইয়া।। য়॥ রপরস গন্ধ স্পর্শ শব্দ পঞ্চ নিয়া। পঞ্চ বিংশতি তত্ম ক্রমেতে ভেদিয়া। এইতো মায়িক দেছ্ ধারণ করিয়া। আছ যে বাসনা ময় কোষেতে বসিয়া।। ১॥ অনাদি অবিদ্যা গুণ বিচিত্র দেখিয়া। চিদানন্দ কনা জীব গেল সে ভূলিয়া। হয়ে পর তত্ম সুথ জাসে ছঃখ ভুঞ্জিয়া। জেন আন্ত্র ফলে আশা পনশ রূপিয়া।। ২॥ বেমন কুলটা নারী কুলেতে থাকিয়া। পর পতি সেবে পত্তি বঞ্চনা করিয়া। বিষয়েতে পরমার্থ সেরপা ভাবিয়া। ধরিবা আকাশচন্দ্র রামচন্দ্র বামন্ হইয়া।।৩॥

কানোড়া বাহার রাগেণ।। খয়রা তালেন গীয়তে।।

आत्त मनः ভात्त ভाবना नलना, अंख्रत हृ एस आलाकति श्रामः मून्दती भारताशित फिक वमना।। धुः।। धर्माधर्म शित हित कत अशिष मुख्य वामना।। ॥ ॥ मन्यती ज्ञा ज्ञा विद्या पि शित कत अहे मञ्जना।। ॥ ॥ ॥ मन्यती ज्ञा विधा मुङ्गि, भागमा शिष जिङ्ग विधा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ धर्म निर्देशन मनः स्मा धर्म करा अवात ज्ञा ।। ॥ ॥ ॥ धर्म निर्देशन मनः स्मा

वादत मन्दत कि जक्षमा नशना, मून्मती नील निर्मी नघतन मामिनी मूर्याकत दत्र तक्षमा ॥ ध्रः ॥ विभिद्र विभिन्न, कितिष्ठ किति कितिष्ठ कितिष्ठ

वार्भ क्रीकारनाष्ट्रा द्वारभन्।। मध्यमान् जारनन भीग्ररज ॥

मनन তরকে উলক্ষে নাচে শিব সবে বামা।। क्रा চঞ্চলা সুস্থির। গতি, মহা মেঘ প্রভাতথি, হরে সুধাকর ত্যুতি, ওবুপ মাধুরী সীমা।। #।। গলিত চিকুরে ঢাকা, ভালে অর্দ্ধা শশী রেখা, নয়ানে অযুক্ত সখা, উদয় ক্যরেছে। দশনে রসনা ধরা, অবতংশ শিশু মরা, বদনে সুধার ধারা, শব কর কাঞ্চী

দামা।। '>।। সদ্য ছিন্ন শির ধরা, তীক্ষু অসি অভয় বরা, মুক্তা করা মুগু হারা, আনন্দে তুলিছে।। এজ জবা পদে লাজে, মণিময় রুপূর বাজে, নাম হৃদি সরো সীজে, বিরাজে দক্ষিণা নামা।। ২।।

রাগিনী কানোড়া॥ তাল জলদ তেতালা॥

অন্তরে অন্তর কালী নিরন্তর তারে দেখ, অন্তর্যাগে যাগী ভাবি পাবিরে পরম সুখ।। ধ্রুং।। বাক্য মনঃ অগোচরা বলে তারা শূন্যে থাক, সে কথা নাথের কথায় ভূমিত মাথায় রাখ।। 🗱 ।। মন্ত্রাথ ধ্যান গোচরা মূর্ত্তিময়ী সে সাকারা, তারে বলে নিরাকারা, একি বিভূমনা। জ্ঞান চক্ষু অন্ধ জার, বলে ব্রহ্ম নিরাকার, এইতো সিদ্ধান্ত তার, সেতো কালী, বহি মুথ।। ১।। তত্ত্ব মদি মহাবাক্য, ব্ৰহ্ম জীবে বলে ঐক্য, তাহে হয় পূর্ব্ব পক্ষ, উপাধি মায়ার।। 🟶 ।। সোহং বলে মায়া দাস, না হতে উপাধি নাশ, লোকে করে উপহাস, লাজ নাই সে, দেখায় মুখ ॥২ ॥ যথা ত্রীহি তুসে বাস, নাহি নাসে অষ্ট শাশ, কভু ত্রন্ধ কভূ দাস, মুেচ্ছের আকার।। 🗱।। মৃত্যুঞ্জয় यात माम, रम काली इरेटा जाम, এकि कथा मर्खनाम, कारत কব মনোত্রঃখ।। ৩।। সুসিদ্ধ সাধক সঙ্গ, পরমার্থ রস রঙ্গ, कति कत मूक्षमक, मस्त्र हिताम ॥ 🛊 ॥ व्यविष्ठा मूर्विष्ठा হবে, কে ভুমি জানিতে পাবে, রামচন্দ্র হবি তবে, কালী পদে উন্মুখ।। ৪।।

শিব আরাধিতা কালী পদ কর আশা।।ধ্রঃ।। আজন্ম মায়ার ঘরে থতনে করিছ বাসা।। *।। অনাদি কুকর্ম যোগ, জন্মিল তোর ভব রোগ, পাপ পুণ্য করি ভোগ, অথও হয়েছে দশা।। >।। জ্ঞান শূন্য ব্রক্ষজ্ঞানী, থ্যান শূন্য তথা ধ্যানী, অলমে না হলি কর্ম্মী, নিষ্কর্মীর প্রায় ।। *।। নাহিক ভক্তির লেস, মুক্তি পথে সদা দ্বেন, তুমিত পাপীর শেষ, হলি ধর্ম কর্ম নাশা।। ২।। সত সঙ্গে নাহি রাগ, অসৎ সঙ্গে অনুরাগ, অসত্যে হয় সত্য ভাব, সত্যে নান্তিকতা।। *।। এই অনুমান কর, নাহি হবে জন্মান্তর, নর হয়ে হলি থর, রামচক্রের এই ভাষা।। ২।।

বেহাগ রাগে।। উক্ত তালেন গীয়তে।।

ঘনং ঘটা ছটা স্থির দামিনী, কামিনী কামান্তে উরে
।। ধ্রং ।। হেরি নথচক্র শোভা, লজ্জিত চক্রের প্রভা, লুকা
ইল অরুণ আভা, পাদপত্ম তলে ডরে ।। # ।। নীলকমল বলি,
'মকরন্ধ আশে অলি, ঝকারে করিছে কেলি, পদতলে তার ।
রজত শিথর পরে, মহামেঘ প্রভা হরে, হেরিলে চাতক
উড়ে, নাচে ময়ূরি ময়ূরে ।। ১ ।। মুক্তকেশী কেশে ঢাকা, মুখ

অকলস্ক রাকা, বিচিত্র কি চক্ররেখা, কপালে তাহার ॥ # ॥
উদয় মিহিরা রুণ, সুপ্রকাশ তিনয়ণ, নাশায় মণি রতন,
বেশরে চপলা ঝরে॥ ২॥ করবাল মুগুকরা, সব্য দক্ষে
অভয় বরা, কর্ণে শোভে শিশু মরা, শিরোহার উরে॥ #॥
করের মেখলা পরী, দস্তাগ্রে রসনা ধরি, অত্মপমাকে সুন্দরী
হাসিতে,অমিয়া ক্ষরে॥ ৩॥ মহা শ্মশানে বিহরে, মহাষত্রে
ত্রিপঞ্চারে, দিগস্বরী দিগস্বরে, অধনন্দে বিহরে॥ #॥ শিবারব
ঘন ঘোর, সুখের নাহিক ওর, রামচন্দ্র তন্তুতোর, দক্ষিণায়
দক্ষিণাদেরে॥ ৪॥

तिवतम तिक्रमी हत वृष्ट्य, विह्ट वृष्ट्यायूट्य ।। ध्रः ।। क्रमा उप्ति प्राथा, जाट्य मिमारेशा ताका, जिट्यामशी टिंड पिका, व्याका प्राथ्य मिमारेशा ताका, जिलामशी टिंड पिका, व्याका प्राप्ति मिस्ति, गात स्थमन तृष्ट्य गिडि, जाट्य टिंपानाम्म मिस्र प्राप्ति क्राप्ति, क्रियानाम्म मिस्र प्राप्ति, क्रियानाम्म मिस्र दिंदा, क्रियानाम्म सिंद जाट्य प्राप्ति, स्थान तिवास क्रिया हिंदा, विद्याप्ति, स्थान तिवास क्रिया हिंदा, विद्याप्ति, स्थान तिवास क्रिया हिंदा, विद्याप्ति, स्थान विद्याप्ति, क्रियानाम, मृत्र रहा क्रिया । स्था प्राप्ति क्रिया । र ।।

कुरू कुरूना मन्नी किस्रदत करूनावरलाकन।। ध्रः।। इरम

चास्र राय नाता, धरत्र वार्णित धाता, এकि विभिन्नी छाता, लूकारेला, कक्षण धन ॥ ॥ तामहिक चिभान मात्र मिन, किक्षण भारेर जाण, नाहिक छेभान ॥ ॥ ।। चक्रम रहे बाहि खर्व, शिं हीरनत कि रहेर्व, वक्षना कतिरल भिर्व, भाष्ट्रार नाहि, द्यान ॥ > ॥

বেহাগ রাগিণ্যাং ॥ হরিতালেন গীয়তে ॥

चत्त काली তোর, ह्रित महाकाल विभिन्न। । ध्रुः ॥ छीर्था हेन छेकाहेन मत्न। देथर्ग वित्रा, ह्रित मृश्कृष्ण भंडमत्क व्यात्म कित्रा। ॥ ॥ व्यक्तात कन्ता मान्ना, जनन्ना श्रवृक्षि कान्ना, चत्त व्याह्म छात्र, महान लहेन्ना ॥ ॥ भूग भाभ नाम, जात, मात्म ছात्म हृत क्रित, पछि काली नाम क्रित, क्रित एए जाण्नि ॥ ॥ भगाहि भक्ति जनम्ना, निवृक्षि नात्मत्व कान्ना, क्रान विकान जनम्न, क्रात्म क्रित्रा ॥ ॥ । व्यानिन्ना जात्म घट्त व्यात, त्रामह क्रात्म, त्रामह क्रात्म, त्रामह क्रात्म, त्रामह क्रात्म, त्रामह क्रात्म, त्रामह वित्रक जात्न, महक्ष्म हहेन्ना ॥ २॥

সকল অবসর হওরে তনু মনঃ সঁপিয়া ।। ধ্রং ।। যাবেরে যথন প্রাণ তনু গড় ভাঙ্গিয়া। দিবেরে তথনি মন্ত্রণা তব ভূলিয়া।। 🛊 ।। হবি যথন ঘটান্তর, সেকালে বিপদ ঘোর, স্বাভাবিক আপন, ভাব ভূবিয়া।। 🛊 ।। প্রাক্তন কর্মের ফল, উদয় গ্রে দকল, ভাবিবি কি কালী, কাল ভয়ে ভয় পাইয়া।। >।। রামচন্দ্র জ্ঞান হীন, কেমনে সে দীনের দীন, মুক্ত হবে একারণ, দেহে থাকিয়া।। *।। অতএব বলি মনঃ এশরীরে সে যাধন, কালী কালী বলিও, কালীর পদ ভাবিয়া।। ২।।

আনন্দময়ী নিরানন্দ দূর করো গো ।। ধ্র:। চিদানন্দ
ময় কর, সকল সংশার হর, অন্তর বাহিরে অভেদ, রূপ হও
গো।। *।। মূলাধার সহস্রার ভাবে এক ঘর কর, জ্ঞানেরে
বিজ্ঞান ধামে লইয়া।। *।। ষটচক্র করি ভেদ, ঘুচাও ভক্তের
ক্ষেদ, মিলাও হংস হংসী, দশ শত দলে রও গো।। ১।।
তত্বমিস মহা বাক্য, তার কলে হও ঐক্য, শক্যার্থে লক্ষণ।
দূরে করিয়া।। *।। সত্য আর বিজ্ঞান আনন্দ, ঘুচাও গো
তাহার দ্বন্দ, রামচন্দ্র নাম এই, উপাধী তার হর গো।। ২।।

ভৈরব রাগেন। একতালা তালেন গায়তে।।

মনো মতের সমাজে আমি শুনেছি সিদ্ধান্ত কথা। ধ্রু।। অভাবের স্বভাব, না হয় নিত্য ভাব, ভাবের ভাব, সেকি হয় অন্যথা।। *।। হইলে সুবিদ্যা, জানে মহাবিদ্যা, নতুবা অবিদ্যায়,প্রমাদ ঘটে।। *।। অস্তি নাস্তি জ্ঞানে, শ্ন্য তত্মজানে,

यादत जादत जन्म मादन नर्सवी ॥ । जार्गम निशम, ना इत मूर्गम, फूर्गम जाशांति विघात कथा ॥ इता नाहि ज्यग्रान जन्म निक्रांग, कतिए घास, थिएस नार्क्यत माथा ॥ २ ॥ या मादन ज्येखंड, दम नर्द्ध जर्देखंड, ना इस मक्का, जाशांति कथा ॥ ३ ॥ मूळान निर्श्वंग, ना इस कथन, ताम वस्तु मनः गंड এই ব্যথা ॥ ৩ ॥

ইতি পূথম খণ্ড শ্রীভবাণী বিষয়ক গীতাবলী সমাপ্তাঃ ৷৷

बिबिक गरी येताय नमः।

ৰমে। ধর্মায় মহতে।

षिতীয় খন্ত।

<u>জীকৃষ্ণস্য রাসলীলা বর্ণনা পদাবলী।।</u>

হান্বির রাগিণ্যাং। খয়রা তালেন গীয়তাং।।

মাইরি গৌরচন্দ্র পূর্ণচন্দ্র উদয় ভকত কে সমাজ, রাজত সব লাজত, অবকোটি মদন।। ধ্রুং।। করণা কিরণ করি বিথার। নাশত হৃদি জন্ধকার। বরিখত হ্রনামামৃত, তাপ জয় তব খণ্ডিত। গত অভ্যুত রাকাপত পতিত চরণ।। ১।। প্রেম ভকতি নির্মাল যশং।।বস্তারিত কিয়ে দশ দিশ। শীতল গুণে জগদানন্দ, তাপিত রহে রামচন্দ্র, পতিতনকে রাজা সোই লোচন হীন।। ২।।

উত্কঠিতা।।

- শীইরি শরদ চন্দ্র, প্রেমানন্দ্র, পূরণ মগুরি ভেরী শোডা,
সুখ সিছু সিল্প তনয়া মুখ।। ধ্রং।। নব কুলুমারণ সুন্দর, অতি
কি: মল সুশীতল কর, বিরহিনীগণ নরন পাপ, অন্তর বন্ধ দেহতাপ, দেখ উড়পত, অন্তুত গত, রজনী মুখ।। ১।।
ইন্দাবন বনকে শোভা, রমণী বুল মন ী লোভা, বংশীবট পুলিন মাজ, ভেয়ীরী আজু রুখ সমাজ, পায়ে কাজ মদন রাজ, আজুকে সুখ।। ২।। প্রকুল মলিকা কুসুম দাম, পেথি মুররী পুরত খাম, অফুকুল ভেয়ী যোগ মায়া, নিক্সতী সম গোপ আয়া; ধাই রুদা বিপিনে, রামচক্রকে মন:।। ৩।।

উক্ত রাগিণ্যাং।। তেওট তালেন গীয়তে।।

আলিরে, শ্রীনন্দনন্দন আজু পুলিনে বাজাওত বংশী। ধ্রং।।
মোইন মুরত খ্রাম, সুগত সুন্দর ঠাম, সুললিত অমুপম,
মন: মোহেরি,রতিপত মুরছত, ভুবন কি যোষিত, ভুলি গেরী
নিজপত, বননিকসী। ১।। তন মনঃ আন ছান বিনাদর শন
কান, ব্যাকুল ভেয়ীরি প্রাণ, না রহে মেরি।। #।। লে চলো
বাঁহা খ্রাম, সকল পূরণ কাম, উৎক্ষিত ক্বিরাম, কাহে
বিসি।। ২।।

ইমন্রাগিণ্যাং । **থয়**রা ভালেন গীয়তে।

পুলিন বনে আজু বাজেরে, ছন ছন ঘন নাদ মুররী স্থাম শুন্দরকি। এই ।। ব্রহ্মানন্দ সুথকে দূর, প্রেমানন্দ সুথ প্রচুর মনঃ হি অবিশানন্দপুর, বণিতা কুলকি।। ১।। বংশী বট সংলি ধান, করুপ্নত বেণু গোপী প্রাণ, মহারাশারন্তী কান, বিপদ মদনকী।। ২ ।। কহত হিঁ করিরামচন্দ্র, পুলকিত তত্তু প্রেমা নন্দ্র, চলতহিঁ শবী গোপী বৃন্দ্র, ব্রহ্মগুর্কি।। ৩।।

खनित मिथ वन वारकति, शंख अखुष्ठ नम् त्क मूख करारमें वकारन हात ॥ ध्रः ॥ वः भौत्क धूनी मनन कनन, हाहेति मूत भूति शर्शन, बक्त करोह कर्र एक, ताक्ष अनिवात ॥ > ॥ श्रे क्ष प्रमान मेथूर, खिख कल विद्र ममीत, भूलिक थर्भनशक्तम भ्रु, विरिध अमिशावात ॥ २ ॥ विश्वनाम ध्रेयन प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान के प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान भूति के प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान भूति के प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान के प्रमान भूति के प्रमान के

ছায়ানট্রাগেণ। হরিতালেন গীয়তে।।

वरन वारक অতি দূর, বেণু সুমনদ মধুর।। দ্রুং।। ত্রিভুবন মোক্টেরবে, কোন্ নারী ঘরে রবে, ভুলে পতি সতীর থসে কটির মেদূর।। ১।। আন্ছান্ করে প্রাণ, সুস্থীর না হয় মন,: মুখা গোপ বধূর ইকি, কলঙ্ক অঙ্কুর।। ২। কবিরাম চন্দ্র ভাষ, উৎক্তিতা এই রস, না পুরিবে মনের আশ, বিশ্বের প্রচুর গ ৩।।

কানোড়া রাগিণ্যাং । আড়া তালেন গীয়তে ।।

চলোরি চলোরি সথি আজু শুভ ছন মানি, আহরি 'ভূবনা ক্সনা, শুনি মুররিকে ধুনি ।। ধ্রং ।। মধুর মুররীরব, পরাভব মনঃভব, কাহে তুড়রতী অব, কুলকে গৌরব মানি ॥ * ॥ রক্ষন ভোজন কোই ছোড়ি লোচনাঞ্জন। ছোড়ি কোই অক্স রাগ অক্সকে উদ্বর্জন ॥ * ॥ গোরস সুরস শিশু মুথ পর ছোড়ি, ছোড়ে পতিকে সেবা, বেদ মারগ রোবিনী ॥ ১ ॥ বসন ভূবণ সবী উলট পলট ভেয়ী। বিসর গেই বিসব সুরত না আই ॥ * ॥ প্রাণ মনঃ জ্ঞান তিন হরলিয়ে, মুররী কাছকে না কহেঁ কোই, যোগ মায়াকে বঞ্চিনী ॥ ২ ॥ কহে 'কবিরামচন্দ্র করি অনুমানে, সাধন সিদ্ধাকে রিত এইমত পূরাণে ॥ * ॥ মহারাস করতহি নিত্য সিদ্ধাকে নিয়ে, জুগত দোঁ। কহিঁ মহারাজা, সোঁ শ্রীশুকমণি ॥ ৩ ॥

ब्राज्ञानके ब्रालिश्वारका रजिकादबनाकी ब्रह्म ।

উৎক্ষিতা ৱাস বিলাপ।

कृत्ल क्लक कतिनः, नगासित मृतती ॥ ६ ॥ जानाहीना ' भाषी जात, शृ्लित जानिष्ठ नातः, तकः वर्ण तात्थ जातः जन कति ॥ > ॥ इःमह कृष्ण वित्रहः, ज्ञञ्ज नाणिल म्महः, धाति शृ्ग मह हिन जाति ॥ २ ॥ शाश शृ्ग नात्न जाति, जनमह हिन हिन जाति ॥ २ ॥ शाश शृ्ग नात्न जाति, जनमह हिन हिन स्वानी स्मन स्वान कति, शाहेल हित ॥ ७॥ तामम्झ जञ्जूष्ठ, मात तृष्ठ कृष्ण श्राश, श्रमान श्रीजानवञ्जू तरहि हिन ॥ 8 ॥

রাগিনী কানড়ার মাজ।। তাল খয়রা।। 🖫

अन नहे के बाद्य श्रृं लिप्त मूर्रार्ड, मग्नुं रिमर्ट्ड। ध्रुं कि कि , द्रहेर ए नार्डि, हल्ट हिल्लाम विभिर्ट्ड। श्रृं हेन्द्र के कि इस्त हर्हि शंगरित। ॥ ॥ कि इन्हांवरन आक् हरेहार कि मांडा कि दर्दे ॥ २॥ नद्रां अक्नांवरन आक् महिला कि कि स्मांडा कि दर्दे ॥ २॥ नद्रां अक्नांवर्ट्ड मिल्डा कि कि । ॥ भा मन्नांवर्ट्ड मिल्डा के महिला मन्नांवर्ट्ड मिल्डा । ॥ १॥ स्मांडा मिल्डा कि भिंद्र विभागति । ॥ १॥ स्मांडा कि भिंद्र विभागति । ॥ भा मन्नांवर्ट्ड मिल्डा का मन्नांवर्ट्ड मिल्डा कि । कि भिंद्र के भिंद्र मिल्डा का मन्नांवर्ट्ड मिल्डा मिल्डा का मन्नांवर्ट्ड मिल्डा मिल्डा मिल्डा का मिल्डा म

স্বগণে । ও । বাৰ্টিক যায় কৰ্ম মদ্য বাৰ্টিক ফায়াৰ ভ্ৰচন এ।। কি হবে গতি যেজন বঞ্চিত হইল শ্ৰহণে । ৪ ।।

পরজ রাগেণ।। জাড়া তালেন গায়তে।।

আজু কেন যন বেণু বাজে মিশিতে, আকর্ষণ করে প্রাণ নারি রহিতে ॥ প্রহা । জল্প বায়ু বহি স্তত্ত, পাষাণ হইল অন্ত, খগ মৃগ পুলকাঙ্গ, বেণু নাদেতে ॥ ১॥ ভূদয়ে প্রবেশ করে, ব্রহ্মানন্দ মুখ হরে, প্রেমানঙ্গ সুখোদয়, করে বেণু তে ॥ ২ ॥ পতিব্রতার ব্রত্তঙ্গ, বাড়িল মদন রঙ্গ, কত্তে কবি রামচ্জ্র, হৈল যাইতে ॥ ৩ ॥

বসন্তরাগেণ।। উক্ত তালেন গীয়তে।।

হরিৰূপ অপৰপ চল দেখিতে, নির্মিল বিধি তারে বৈশে নিভূতে।। ধ্রুং।। যে দেখেছে একবার, মনোনেত্র নহে তার, সেকি গো কখন ঘরে, পারে থাকীতে।। ১॥ ভুবন মোহম চান্দ, পাতিয়া ৰূপের কান্দ, ধরিকূল বধু ধরে, নয়ান বানে তে।। ২।। লৈয়া রামচন্দ্র সঙ্গে, রন্দাবন চলরকে, কালাতো বুচাইবে আলা কি কায গ্হেতে।। ৩॥

কাৰ্ট্ৰোড়াৰাহার রাগিগ্যাং ॥ খয়রা **ডালেন গীয়তে** ॥ অভিসার ॥

हिला नहें ताहे कालू मकारम। विनारम श्रैलिरन महा तेरियाती, नरक नहहती बर्ल काहि मंगी श्रेकारम ॥ धुर ॥ खन लख कत्री लामला ख्या कत कत नथरत। मिन मिक्षित खात, राम कूहरत हरन नातरन ॥ ১॥ शूर्न हेन्मू तमन मखन यन घरोत्र हक्त्रला। छेतहाता विन राम हलना श्रेकारम खाकारमा। २॥ श्री अक्र तांगका स्मानित मयू खारम लारम ख्रमति, तांमहक्त मस्ना लाम लखानव, लाम तक रा।। ७॥

রাগিণী ছায়ানট্।। তাল ধিমা তেতালা।।

নবরঙ্গী কিশোরি চলিলো ভেটাতে মুরারি।। ধ্রং।। প্রেম
মদ্দে ক্লুর তর, ভূলি গুরুজন ডর, শ্রাম সোহাগিনী শ্রামের
গরব করি।। ১।। সথি অঙ্গে অঙ্গ দিয়া, আবেশে অবশ
হৈয়া, চলিতে না পারে সেতো রাজ কুমারী।। ২।। কবি রাম
চল্ডের আশ, ওপদে হইতে দাস, অভিসার এই রসে,
মিলিবে হরি।। ৩।।

[69]

বেহাগ রাগিণ্যাং।। আড়া তালেন গীয়তে।।

हिल द्राम मख्रल भर्तम तकनी टेम तमनी जूलाहेल ।। ध्रः ।। इश्मात्थानी मुक्तावाला, विक्ताहिल हात्म् त माला, हाकिया 'हात्म् त जाला, छेमय जूज्रल । *।। वमन जूबन भाजा, औक्रस्थित मत्नात्लाजा, ख्किज हेमला প्रजा, गंकिशामिनी ।। *।। छक्त कनात नाहि छत, প्रिम् मत्म हिताहत किर्तामहस्म नत, हल हिल्ला। ५।।

চলে পুলিন বনে। মুরলি ধনি সুনি ধনি আবেণে।। ধ্রু।।
সচকিতা বেণু পথে, চলে সবে যুথেং, ব্যস্ত পরাব্যতিক্রমা
বস্ত্র ভূষণে।। ্লা রন্ধন ভোজন ত্যাগি, কৃষ্ণমনা অনুরাগী,
নাহি ডাকে কেহকারে, আয়গো সথি আয় ।। ক্লা বেণুরো
বিচিত্র রঙ্গ, পতিব্রতার ব্রত ভঙ্গ, কহেকবি রামচন্দ্র, শ্রীর্ন্দা
বনে ॥ ।।

পরজ মালকোশ রাগেণ।। উক্ত তালেন গীয়তে।। অভিনার গোপিনী আগমন।।

গোপিগণের আগমন।। হইল যথা - এনন্দ নন্দন।। ধ্রুং।। পুলিনে চপলা মালা, উদয় গোপের বালা, ঘন ঘটা শুম

উৎকণ্টিতায় কৃষ্ণ প্রাপ্তি।।

বেণু করি আকর্যন, আনিলো যত কুল বধুগন।। ধ্রুং।। আর
এক অসন্তব, করিয়া বেণুর রব, নরনারী করে শব, মোহে
ত্রিভুবন।। *।। বিচিত্র বেণুর গানে, আফর্যিয়া গোপি প্রাণে
আনে নিজ সয়িধানে, রাসমগুলে।। *।। পতি পিতা ভাতা
তারে, যতনে রাথিতে নারে, নির্ভর হয়ে অন্তরে, করে
আগমন।। ১।। গোকুলের অনেক নারি, পিতা ভাতা পতি
তারি, রাথে ছার বদ্ধ করি, নির্গম না হয়। *।। ধ্যানে কৃষ্ণ
চিন্তা করি, গুণময় দেহ হরি, পাপ পুণ্য পরিহরি, পায় দর

শন।। ২।। রামচন্দ্র এই কয়, ভক্তিতে ভাবেৰাদয়. তবে সে অন্তরে হয়, প্রেমের উদয়।। *।। দূরে যায় ভক্তি মুক্তি, তবে হয় কৃষ্ণ প্রাপ্তি, নহিলে কাহার শক্তি, দেখে শ্রীচরণ।। ও।।

বেহাগ রাগেণ।। উক্ত তালেন গীয়তাং।।

রাশরুসেরসাভাসে নন্দনন্দন,জিজ্ঞাসেন গেশপীকাগণে ॥ধ্রং।। कइर मुमझन, उरा त मझन तन जारेन। यमूना कून, পুলিনে কার অন্বেষনে ॥ 🛪 ॥ ঘোর ৰূপা এ রজনী, ঘোর সত্ব নিষেবিনী, তোমরা কুল রম্ন, পুনঃত্রজে যাও।। *।। পিতা মাতা ভ্রাতা পতি, ব্যাকুল হইয়া অতি, নানা স্থানে করে গতি, পরিশ্রান্ত অদর্শনে ॥ > ॥ শুনহে বেদের মর্মা, পতিব্রতার এই ধর্মা, পতি সেবা বিনা কর্মা, নাহি আর ভার।। 🗱 ।। পতি বন্ধুবর্গ যত, হবে তারি অনুগত, এইতো সভীর রীভ, বৈদিকে লৌকিকে মানে॥ ২॥ নারা উপপ্তি करत, मना छप्न जात जास्रत, शुरा रनाय मानि करत, कलक তাহার।। * !! मर्व्यव व्ययम भाग्न, तैमत्त खर्भ नाहि পाग्न, জীবনে মরণ প্রায়, অখ্যাতি রহে ভুবনে ॥ ৩॥ শুনিয়া কুষ্ণের কথা, গোপীকার অন্তরে ব্যথা, লাজে করি হেট মাথা, কান্দে অনিবার !! * !! পদনথে ক্ষিতি লিখি, রামচন্দ্র হৈল তুঃখি, কর না উত্তর স্থী, এখন কি ভয় মনে।। ৪।।

রাদে গোপ্যক্তি।

বিনয়ে গোপীকা কহে প্রাণনাথ,কেন করছে বঞ্চনা। ধ্রং।।
পুরিয়া বেণুর গানে, সর্বেক্তিয় আকর্ষণে, আনিয়া পুলিন
বনে, উচিৎ কি বিড়য়না। য়া। বলুবর্গ পরিত্যানি, ভবপদে
অনুরাগি, হয়ে হইলাম ছঃখভাগী, করুণা তোমার।। য়া।
নাথ যদি উপেক্ষিলে, নাহি আর যাব গোকুলে,প্রবেশি যমুনা
জলে, অগ্রিকুণ্ডে ত্যক্তপ্রাণা ।। য়া। তুমি নাথ বেদ বক্তা,
ধন্মাধর্মের তুমি শাস্তা, নাহি তোমার কথার আস্তা, একি
অবিচার।।য়া। পাদপদ্ম নিকট হৈতে, নাপারি ব্রক্তেষাইতে,
অবলা শরলা তাতে, নাহি কর বিবেচনা।। ২ ।। তুমিতো
প্রাণের পতি, তোমাবিনা নাহি গতি, ইথে কি অবলা রক্ষতি,
কলম্ব তোমার।। য়া। শুনিয়া গোপীর উক্তি, প্রসন্ন গোপীর
পতি, রামচন্দ্র মাণে ভক্তি. গোপিপদ্ম বাসনা॥ ৩ ।।

क्यक्य ही मूत्र वाशिनगर ।। वाशिकात्व भीयकार ॥

রাস রস বর্ণনা ।।

স্থিহে যমুনা তটে বংশীবট সন্নিকটে। পুলিনে জ্রীরাধা সহ বিহরে রাসে হরি ॥ ধ্রুং॥ রিড মনি মগুপে, শোভে চক্রাতপে, ক্ষচিত মণি কাঞ্চনে, রতন বেদি কোপরি॥ *॥ উদিত সুধাংশু করে, इन्मावन শোভা করে, বিকচে কুসুমা বলি, গন্ধামোদিত করে।। *। শ্বর্ণময় হৃন্দাবন, যমুনা জল নীলঘন, কুমুদ কূল পরিমলে, বাঙ্কারিছে মধুকরী।। >।। শ্রীঅঙ্গরাগ ক্রচি জলদ মহিমা হরে। হরিল হরিতাল ছবি পীত পট কটিপরে। বদন সুধাংশু পরিপূর্ণ মণ্ডল হরে। অরুণ নয়নামুজে, মনসিজে মোহে নারী।। ২।। মণি মুকুট বিজয়ী শিথি পিচ্ছ চূড়া শিরে। ভালে অলকারলি বংশী মধুরা ধরে। শ্রাবণে মণি কুণ্ডলে কর্কে কৌস্তভ মণি। হার বনমালা গলে, নাচে ত্রিভঙ্গ করি।। ৩।। রক্ত জবা নিন্দি নবরাগ চরণামুজে। লাজে নথরে শশী রত্ব ভূপুর বাজে, কন্দর্প দর্প হরে হেরি রূপ মাধুরী, শ্রীরামচন্দ্র কবি রাধা পদে

আজু রন্দাবনে যমুনা পুলিন বনে নন্দকে নন্দন মদন
মোহে সথি।। ধ্রং॥ রাসে রাসেশ্বরী তাকিজে। সহচরী।
ভাকিজো অঙ্গজা মিলিত মগুরী ভেরী।। 🗱।। গোপনকে
কামিনী হৈমকান্তি মণি। ঘেরি চৌতুর সথি স্থকিত সৌদা
মিনী। রতন আভরণ তন হার উররাজতী রেসমকে সাড়ি,
সুচিত্র চুনারি ওঢ়ি।। ১।। মরকত মণি নিকর শ্রামসুন্দর বর,
মিথুনকে প্রথমজীমুত নবকান্তি ধর। তামো পীতাশ্বর তড়িত
কে জ্যোতি হর। ৰূপকে ভূপ গোপিনকে শোভা হরে॥ ২॥

সোহে বর্মাল উরহার গুঞ্জাকেরি। কুসম আভরণ তনকঠে কৌস্তুভ ধরি। অঙ্গ ত্রিভঙ্গ সুবৃদ্ধিম লোচন। শিরসি চূড়া শিথি পিচ্ছ সোহে চন্দ্রিমা। ৩॥ উদয় রাকারণ ছায়ে রন্দা বন। কানকে মুররি ঘন বোলহিঁ ছনছন। গণিত পাথালদ্রম মোহে পশু পঞ্জিগণ। চলিত তুক্লকূল ভুবনকে নারীগণ॥।।।। ভয়েরি মুরতী মতি রাগ সহ রাগিনী, বাজে বছ যত্র ঘাঁহা গোপিনী যত্রিণী। নাদগত ভেদ সুরত্রহ্ম পুর ছায়েরী। প্রণত কবিরাম হৃদি বাজে রাসেশ্বরী। ৫॥

উক্ত রাগিণ্যাং।। কওয়ালি তালেন গীয়তে।।

স্থি সুথমে পরম সুথ ধাম। অথিল রসামৃত মূরতি যুবতী নয়ন মনকি অভিরাম ।। ধ্রং ।। নবীন কৈশর, নটবর সুন্দর, কমনীয় বদন শ্রাম ! রতিপতি মোহন, বল্লবী জীবন, নন্দকে নন্দন নাম ।। ১ ।। ব্রহ্মা নন্দ সুখ, বৈমুখ, অনুভব, প্রেমানন্দ পরিনাম । রামচন্দ্র তন্তু মন রঞ্জন, ৰূপ পদপঙ্কজ রক্ত কাম ।। ২ ।।

বেহাগ রাগিণ্যাং।। খয়রা তালেন গীয়তে।।
নর্ত্তক রাস।
রাসমগুলে সই নাচে নব নাগর ঐ নাগরী।। ধ্রং।। মণি

নির্মিত স্তম্ভ বিক্রম, জবা কুশুমাবলি বিভ্রম, চন্দ্রাতপ চন্দ্র মণ্ডল, মুক্তা সারি সারি।। 🛊 ।। মরকত মণি চিত্রিতাঙ্গ, বঙ্কিম ক্ষ ত্রিভাঙ্গি ভঙ্গ, বঙ্কিম লোচন পক্ষজ, বঙ্কিম চুড়া ধারী। *। । বৈক্ষিম করে বংশী বদনে, বাজিছে রভন মূপুর চরণে, উর্স, হার পীতাষ্বর গোপীকা মনোশারি॥১॥ পুটিত হেমকান্ডি গৌরী, ত্রিভুবনে একা এ সে সুন্দরী। নীলাম্বরী মরি কি মাধুরি, উপমা নাহি তাহারি ॥ 🗱 ॥ চরণ কমলে কমল লাজে, পদতলে জবা কুসুম রাজে। বাজে ভূপুর মধুর মধুর, ভাবনে মোত্র মুরারি ॥ ২ ।। নাচে চারি দিগে মুগ্ধা রমণী, করে কঙ্কন কটি কিঙ্কিণী, বাজিছে চরণে ভূপুর ধনি, অবণে মধুর মাধুরী।। *।। করতালি করে বাজে, সুতুক্ত দৃমিকি দৃষ্টিকি বাজে, মৃদক্ত কৰাণ কর জয় প্রীরাধে, ঘনঘন বাজে মুবরি ।। ৩ ।। রাস মণ্ডলে সুপ্রকাশ, রমণী গণের পুরিল আশ, গোপীদর মধ্যে বাস, রাস্কেলাসে চাতুরী 🗆 🗱 ।। কহে কবি দ্বিজ রামচক্র, নরলীলায় একি রাস রঙ্গ, ব্রহ্মরাত্রি শীমাইথে, লীলা এই ঐশ্বরী।। ৪।।

উক্ত রাগিণ্যাং।। আড়া তালেন গীয়তে।।

ছাড়িরাস মণ্ডবী অন্তর্ধ্যান করেন হরি করি চাতুরী ।। ধ্রুং।। বাড়িল মদন রঙ্গ, রাস রস দিয়া ভঙ্গ, করি শ্রীরাধিকা সঙ্গ, চলে মুরারি । প্রায় মধ্য রাত্রি গতা, পথখান্তে পরি আন্তা, ঘোর কান্তারে কান্তা হরি শরণী, ॥ *।। কহে রাজ নিদ্দী, কৃষ্ণেরে স্বাধীন জানি, যথা মনোলয় তুমি চলিতে নারি।। ১।। শুনিয়া প্রিয়ার বাণী, নায়কের চূড়ামণি, কহে শুন বিনোদিনী, আরো নাই উপায়। *।। ক্ষেক্ত কর আরো হণ, অদূরে বিশ্রাম স্থান, করিতে চরণার্পণ, লুকাইলা হরি।। ২।। যুথেযুথে গোপীগণ, করি কৃষ্ণ অন্তেষণ, ভ্রমিতে ভ্রমিতে বন, আইলেন তথা। *।। শুনি প্রধানার ভাষা,গোপী কার নবম দশা, রামচন্দ্র করো আশা, লাজ নাই তারি।। ৩।।

কোথা গেলে নাথহে নন্দনন্দন রাসমগুলী ছাড়ি। ধ্রং।।
করিয়া বংশীর গান, আকর্ষণ করি প্রাণ, বিনা অপরাধে বধ
অবলায় করি চাতরী।। কি করিব কোথা যাব, কি রূপে
ভোমারে পাব, ঘোর কাননান্তরে, কারে জিজ্ঞাসিব।। *।।
তুমিতো প্রাণের সথা, প্রাণ রাথ দিয়া দেখা, না যায় জীবন
রাখা, তোমায় না দেখিয়া হরি।। ১।। দ্রামচন্দ্র এহি কয়,
এ ভোমার উচিত নয়, নাহি লোক লাজ ভয়, আপনার
হৈয়া।। *।। অবলা সরলা বালা, নাহি জানে প্রেমজালা,
ভারে মজাইলা কালা, ঘরের বাহির করি।। ২।।

সদয় উদয় হরি, মৃত্ হাসি আসি অধিষ্ঠান রাসে ।। ধ্রং।। শুনিয়া গোপীর গীত, পরম আনন্দ চিত, হৈয়া গোপী অনু গত, লয়ে গোপী রাসরসে ।। # ।। পীতাম্বর বনমালী,
প্রেবেশি রাস মণ্ডলী, রাস রসে কুতুহলী, গোপীর বসে ।। #।।
সাধন ভত্কা রসে, রামচন্দ্র ভাবোলাসে, দেখে হৃদি পথ
কোষে, পাদপক্ষরজো আশে ।। > ।।

সম্ভোগ রস ।।

• হরি মনোরঞ্জনি অলসে বিলাসে শ্যাম উর্দি । ধ্রুং ॥ শ্যাম মরকত প্রভা, প্যারি কাঞ্চন লোভা, হইল বিচিত্র (শাভা, , जल দে लूका हेल गनी ॥ *।। इन्मात त्या कण्यक्रम, ज्यस्त प्र प्रिश्मामन, भग्नन कितल मूर्य कूछम भग्नाग्र ॥ *॥ इहेल मग्रताजि गठा, छक्माति करहकथा, लूका हेल शृष्ठी निषयी, (मता भन्नायया मानि ॥ >॥ जल म्म. जारतम जल, वाफ्ल जनल क्रम, ताक्रम जिलम जानि, छेथल अम्बली ॥ *॥ जान देन हेल जनि ताम जिलम क्रम कि हिन, क्रम के दिन क्रम के प्र कि प्र कि प्र के प्र के

উক্ত রাগিণ্যাং।। তিওট তালেনগায়তে।।

नन्म किर्मात छेत ताराधित इँत । ध्रः । भूनकि उ उनमन, छेशरक जानन्म घन, यमूना भूनिरन, मनन अतीर उपे दँत ।। अति काश्रन नाम, उज़ि जांक जो की कुल मान, उज़ि काश्रन नाम, उज़ि काश्रम नाम, उज़ि काश्रम नाम, उज़ि काश्रम धाम, काश्री काश्रम धाम, धाम काश्री काश्रम खान, धाम काश्रम खान, धाम काश्रम खान, धाम काश्रम कान, धाम काश्रम काल, धाम काश्रम कान, धाम काश्रम काल, धाम काश्रम काल, धाम काश्रम काश्रम काल, धाम काल, धाम काश्रम काल, धाम काल, ध

ইতি দিওীয় খণ্ড ঞীকৃষ্ণস্য রাসলীলা বর্ণনা পদাবলী সম্পূর্ণং।।